FAIZANE BABA FARID GANJE SHAKAR (HINDI)

फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

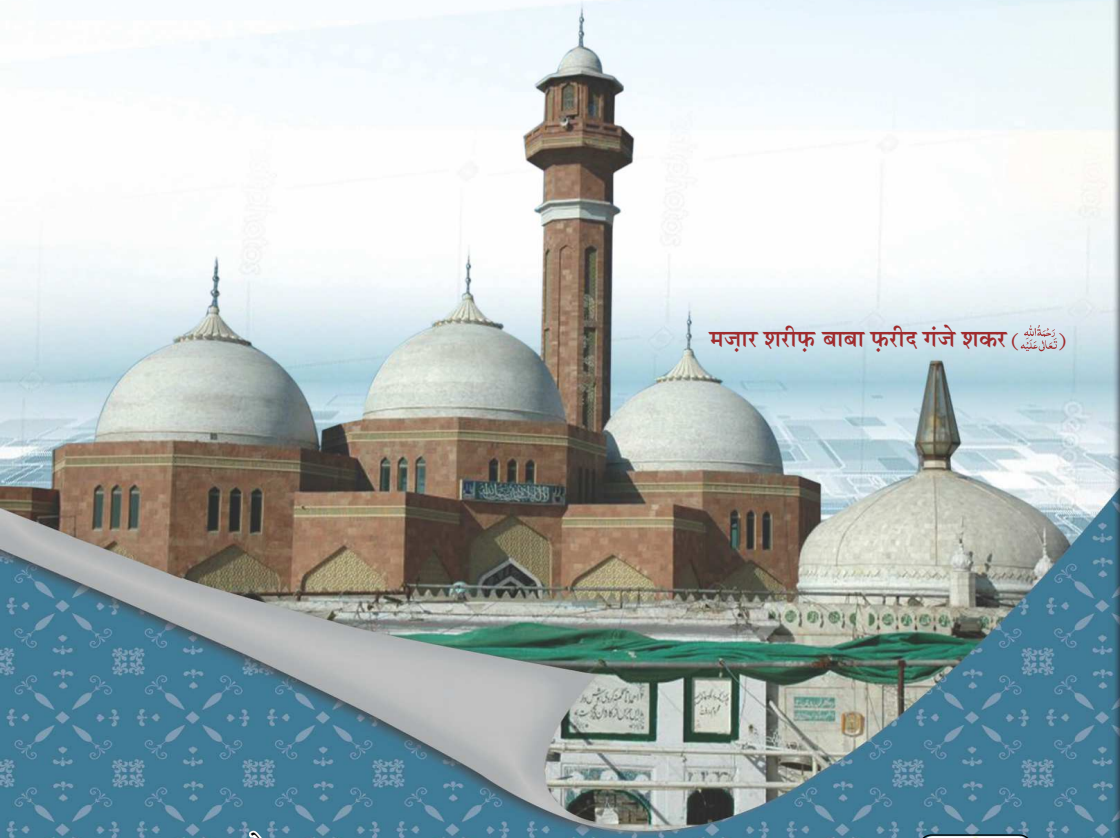

मज़ार शरीफ़ बाबा फ़रीद गंजे शकर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा

MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = ُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में जिन मुक़द्दस और बर गुज़ीदा हस्तियों ने अपने इल्मो अ़मल के ज़रीए इस्लाम की नूरानी शम्अ़ रोशन की और उस की नूर बिखेरती किरनों से तारीक दिलों को जगमगाया, भटकते ज़ेहनों को मर्कज़े रुश्दो हिदायत पर जम्अ़ किया, प्यासी निगाहों को इश्क़ो मह़ब्बत के जाम से सैराब किया, सुलगते दिलों को आदाबे शरीअ़त की चांदनी से ठंडक बख़्शी। इन में आस्माने विलायत के आफ़्ताब सिलसिलए आ़लिय्या चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इस्मे गिरामी भी है।

---

1 ... مَجْمَعُ الزَّوَائِد، كتاب الادعية، باب في الصلاة على النبي الخ، ١٠/٢٥٣، حديث: ١٧٢٩٨

www.dawateislami.net

दरजे ज़ैल सुतूर में हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सीरते मुबारका के चन्द रोशन और चमकदार पहलूओं से अपनी ज़िन्दगी के गोशों को जगमगाइये।

विलादते बा सआ़दत

सुल्तानुल आ़रिफ़ीन, बुरहानुल आ़शिक़ीन, शैख़ुल इस्लाम हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर फ़ारूक़ी ह़नफ़ी चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 569 हिजरी[1] या 571 हिजरी[2] मुताबिक़ सिने 1175 ईसवी में मदीनतुल औलिया मुल्तान के क़स्बे "खोतवाल"[3] में पैदा हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तारीख़े विलादत में और भी कई अक़्वाल हैं।

नामो नसब

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का अस्ल नाम मसऊ़द है जब कि फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लक़ब से दुन्या भर में जाने जाते हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का सिलसिलए नसब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तक पहुंचता है। शजरए नसब यूं है : हज़रते फ़रीदुद्दीन मसऊ़द बिन शैख़ जमालुद्दीन

1....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 159

2.....ह़याते गंजे शकर, स. 258

3.....येह मक़ाम मदीनतुल औलिया मुल्तान (शहर) से बारह मील जानिबे मशरिक़ बुधला सनत रोड पर कोठेवाल के नाम से मा'रूफ़ है और इस में हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे बुज़ुर्गवार (हज़रते जमालुद्दीन सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का मज़ारे पुर अन्वार ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है। यकुम, दो अप्रेल को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का उ़र्स बड़े एहतिमाम से मनाया जाता है।

(तज़किरए हज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या, स. 135)

www.dawateislami.net

सुलैमान बिन शैख़ शुऐ़ब बिन शैख़ मुह़म्मद बिन शैख़ यूसुफ़ बिन शैख़ शहाबुद्दीन फ़र्ख़ शाह काबुली बिन नसीर फ़ख़रुद्दीन मह़मूद बिन सुलैमान बिन शैख़ मसऊ़द बिन शैख़ अ़ब्दुल्लाह वाइ़ज़ असग़र बिन वाइ़ज़ अक्बर अबुल फ़त्ह़ बिन शैख़ इस्ह़ाक़ बिन शैख़ नासिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के एक सो एक नाम व अल्क़ाबात हैं। जिन का विर्द ह़ाजत रवाई में बेह़द मुअस्सिर है।[2] मश्हूर अल्क़ाब "बाबा फ़रीद", "फ़रीदुद्दीन" और "गंजे शकर" हैं।

ख़ानदानी पस मन्ज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ काबुल के बादशाह फ़र्ख़ शाह से था। जब तातारी फ़ितना दुन्याए इस्लाम पर ग़लबा पाने के लिये ख़ून की नदियां बहा रहा था। उस की सफ़्फ़ाक और ख़ूं ख़्वार तलवार ने इस्लामी ममालिक को तख़्तो ताराज किया यहां तक कि काबुल पर ह़म्ला आवर हुवा तो ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के जद्दे अमजद ने उन से जंग करते हुवे जामे शहादत नोश किया। काबुल की वीरानी के बा'द ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दादाजान शैख़ शुऐ़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने अहलो इ़याल समेत काबुल

1.....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 186
2.....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 431, सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 185

www.dawateislami.net

से हिजरत कर के मर्कज़ुल औलिया लाहोर पहुंचे फिर कुछ अ़र्सा "कुसूर" में क़ियाम फ़रमाया। कुसूर के क़ाज़ी ने सुल्त़ाने वक़्त को ख़बर दी कि एक आ'ला ख़ानदान का मुमताज़ आ़लिम उन के शहर में सुकूनत पज़ीर है। सुल्त़ान ने उन्हें किसी आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ करना चाहा लेकिन शैख़ शुऐ़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन्कार फ़रमा दिया। सुल्त़ान ने इसरार कर के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को खोतवाल (कोठेवाल) का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया।[1]

वालिदैने माजिदैन

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ाहिरी व बात़िनी उ़लूम के गहवारे में आंख खोली, वालिदे माजिद ह़ज़रते शैख़ जमालुद्दीन सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुस्तनद आ़लिमे दीन थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शादी ह़ज़रते मौलाना वजीहुद्दीन ख़ुजन्दी अ़ब्बासी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की साह़िबज़ादी ह़ज़रते बीबी कुरसुम ख़ातून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا से हुई थी ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिद साह़िब आप की कम उ़म्री में विसाल फ़रमा गए थे। बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए माजिदा आ़बिदा, ज़ाहिदा और तहज्जुद गुज़ार होने के साथ साथ विलायत के आ'ला मर्तबे पर फ़ाइज़ थीं।[2]

1.....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 119 मुलख़्ख़सन, मह़बूबे इलाही, स. 50, 51

2.....अन्वारुल फ़रीद, स. 43, ह़याते गंजे शकर, स. 253 वग़ैरा

www.dawateislami.net

ग़ैर मुस्लिम चोर को ईमान नसीब हो गया

एक रात आप की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना कुरसुम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا नमाज़े तहज्जुद अदा फ़रमा रही थीं कि एक ग़ैर मुस्लिम चोर मौक़अ़ पा कर जूंही घर में घुसा उसी वक़्त अन्धा हो गया। उस ने गिड़ गिड़ा कर यूं अ़र्ज़ की : अगर इस घर में कोई मर्द है तो वोह मेरा बाप और भाई है और अगर कोई औ़रत है तो वोह मेरी मां और बहन है बहर ह़ाल वोह जो भी है मुझे अन्दाज़ा हो गया है कि उस की बुज़ुर्गी ने मुझे अन्धा किया है लिहाज़ा उसे चाहिये कि मेरे ह़क़ में दुआ़ करे ताकि मेरी बीनाई वापस आ जाए। ह़ज़रते सय्यिदतुना कुरसुम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने उसी वक़्त उस के लिये दुआ़ फ़रमाई जिस की बरकत से उस की बीनाई वापस आ गई और यूं वोह शख़्स वहां से चला गया। जब सुब्ह़ हुई उस ने अपने घरवालों समेत इस्लाम क़बूल कर के आयिन्दा चोरी न करने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लिया।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रमज़ान में दूध न पिया

असरारुस्सालिकीन में है कि एक दफ़्आ़ उन्तीस शा'बान को आस्मान अब्र आलूद था। लोगों ने ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते क़ाज़ी जमालुद्दीन सुलैमान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से दरयाफ़्त किया कि आज मत़लअ़ अब्र

1.....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 156, फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम, स. 224

www.dawateislami.net

आलूद है अगर आप फ़रमाएं तो कल रोज़ा रखा जाए ! उन्हों ने फ़रमाया : कल यौमे शक है और यौमे शक का रोज़ा रखना मकरूह है। इस के बा'द लोग एक अब्दाल के पास गए जो उसी क़स्बे में रहते थे। जब उन से येह मस्अला दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "आज रात क़ाज़ी सुलैमान के हां एक लड़के की विलादत होगी जो कुतबे वक़्त होगा। अगर वोह बच्चा कल दूध न पिये तो तुम रोज़ा रख लेना वरना नहीं" चुनान्चे, उसी रात क़ाज़ी सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हां नेक बख़्त लड़के की विलादत हुई और उस ने अगले रोज़ दूध न पिया और रोज़ा रखा। उसे देख कर लोगों ने भी रोज़ा रख लिया। येह बच्चा कोई और नहीं **हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजे शकर** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه **थे।**[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो हर मुसलमान की ज़िन्दगी कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ होनी चाहिये मगर मां-बाप का नेक होना ऐसा अम्र है कि औलाद की सालेहिय्यत (या'नी परहेज़गारी) में इस का अहम किरदार होता है। रोज़ मर्रा का मुशाहदा है कि उम्दा से उम्दा बीज भी उसी वक़्त अपने जोहर दिखाता है जब उस के लिये उम्दा ज़मीन का इन्तिख़ाब किया जाए। मां बच्चे के लिये गोया ज़मीन की हैसिय्यत रखती है, लिहाज़ा बीवी के इन्तिख़ाब के सिलसिले में मर्द को बहुत एहतियात से काम लेना चाहिये कि मां की अच्छी या बुरी आदात कल औलाद में भी मुन्तक़िल होंगी। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ है कि सिलसिलए आलिया

1.....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 434, हयाते गंजे शकर, स. 255

www.dawateislami.net

चिश्तिय्या के तीन अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी, ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर और ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) की तरबियत मां ही के हाथों हुई।[1] क्यूंकि इन तीनों औलियाए किराम के वालिद बचपन में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे।

मुतअ़द्दिद अह़ादीसे करीमा में मर्द को नेक, सालेह़ा और अच्छी आ़दात की ह़ामिल पाक दामन बीवी का इन्तिख़ाब करने की ताकीद की गई है चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों को मद्दे नज़र रखा जाता है : (1) उस का माल (2) ह़सब-नसब (3) हुस्नो जमाल और (4) दीन।" फिर फ़रमाया : "तुम्हारा हाथ ख़ाक आलूद हो तुम दीनदार औ़रत के हुसूल की कोशिश करो।"[2] एक दूसरी रिवायत में यूं इरशाद फ़रमाया : "औ़रतों से उन के हुस्न की वज्ह से निकाह़ न करो और न ही उन के माल की वज्ह से निकाह़ करो, कहीं ऐसा न हो कि उन का हुस्न और माल उन्हें सरकशी और ना फ़रमानी में मुब्तला कर दे, बल्कि उन की दीनदारी की वज्ह से उन के साथ निकाह़ करो। क्यूंकि चपटी नाक, और सियाह रंग वाली कनीज़ दीनदार हो तो बेहतर है।"[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....ह़याते गंजे शकर, स. 276

2 ... بخاری، کتاب النکاح، باب الاکفاء فی الدین، ۳/۴۲۹، حدیث: ۵۰۹۰

3 ... ابن ماجة، کتاب النکاح، باب تزویج ذات الدین، ۲/۴۱۵، حدیث: ۱۸۵۹

www.dawateislami.net

तरबियत का एक अन्दाज़

हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बचपन से शकर बहुत पसन्द थी। वालिदए मोहतरमा ने पहली बार जब आप को नमाज़ की तल्क़ीन की तो फ़रमाया : "बेटा ! नमाज़ पढ़ा करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है और इबादत गुज़ार बन्दों को इन्आमात से नवाज़ता है। तुम नमाज़ पढ़ोगे तो तुम्हें शकर मिला करेगी।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब नमाज़ अदा फ़रमाते तो वालिदा आप के मुसल्ले के नीचे शकर की एक पुड़िया रख दिया करतीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पाबन्दी से नमाज़ अदा फ़रमाते और नमाज़ के बा'द शकर की सूरत में अपनी दिली मुराद की तक्मील का नज़्ज़ारा अपनी आंखों से मुलाहज़ा फ़रमाते। एक दिन आप की वालिदए मोहतरमा मसरूफ़िय्यात के बाइस जाए नमाज़ के नीचे शकर रखना भूल गईं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो वालिदा ने पूछा : बेटा ! शकर मिली ? सआदत मन्द बेटे ने अर्ज़ की : जी हां ! मुझे हर नमाज़ के बा'द शकर मिल जाती है। येह सुनते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदा अश्कबार हो गईं और इस ग़ैबी मदद पर दिल ही दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने लगीं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन को चाहिये अपनी औलाद को दीन का पाबन्द बनाने और सुन्नतों पर अमल का जज़्बा दिलाने के लिये ऐसी हिक्मते अमली अपनाएं कि जिस से

1.....महबूबे इलाही, स. 52, तज़किरए औलियाए पाकिस्तान, 1 / 289, जवाहिरे फ़रीदी, स. 298 अल्लाह के सफ़ीर, स. 221 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

उन की दिलजूई भी हो और उन्हें सुन्नतों पर अ़मल की रग़बत भी ह़ासिल हो। हमारे अस्लाफ़ बच्चों को कैसे अह़सन त़रीक़े से दीन की त़रफ़ राग़िब किया करते थे ! चुनान्चे,

क़सीदा याद करने पर इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र मुह़म्मद बिन ह़सन दुरैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में मेरी तरबियत की ज़िम्मेदारी मेरे चचाजान ने ले रखी थी। चचाजान की आ़दत थी कि खाने के मौक़अ़ पर मेरे उस्ताद साह़िब को भी शामिल कर लिया करते थे। एक दिन चचाजान तशरीफ़ लाए तो उस्ताद साह़िब मुझे ह़ारिस बिन ह़िल्लिज़ा का क़सीदा पढ़ा रहे थे। चचाजान ने मुझ से फ़रमाया : "अगर तुम ने येह क़सीदा याद कर लिया तो तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां चीज़ तोह़्फ़े में दूंगा।" येह कह कर उन्हों ने उस्ताद साह़िब को खाने के लिये बुलाया। उस्तादे मोह़तरम खाना खाने के लिये तशरीफ़ ले गए, खाने के बा'द तक़रीबन एक घंटा (किसी मुआ़मले पर) गुफ़्तगू करते रहे। इस दौरान मैं ने ह़ारिस बिन ह़िल्लिज़ा का वोह दीवान मुकम्मल याद कर लिया, उस्ताद साह़िब मेरे पास आए तो मैं ने बताया : मैं वोह दीवान पूरा याद कर चुका हूं। उस्ताद साह़िब को बेह़द तअ़ज्जुब हुवा, मेरा इम्तिह़ान लिया, जब मेरे ह़िफ़्ज़ का यक़ीन हो गया तो उन्हों ने चचाजान को बताया, तो चचाजान ने वा'दे के मुत़ाबिक़ मुझे इन्आ़म से नवाज़ा।[1]

1 ... تاریخ بغداد، محمد بن حسن بن درید الخ، ۱۹۲/۲

www.dawateislami.net

ता'लीमो तरबियत

हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ख़ानदान शराफ़त और इल्मी वजाहत में मुमताज़ था। इस लिये बचपन ही से उन की ता'लीमो तरबियत का एहतिमाम ख़ानदानी रिवायात के मुताबिक़ हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बारह साल की उम्र में क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ कर लिया था।[1] खोतवाल (कोठेवाल) में अ़रबी व फ़ारसी और दीनियात की इब्तिदाई ता'लीम हासिल करने के बा'द वोह अठ्ठारह बरस की उम्र में मदीनतुल औलिया मुल्तान गए। जो उन दिनों उ़लूमो मआ़रिफ़ का मर्कज़ और इल्मे ज़ाहिरो बातिन का संगम था। जहां हज़रते मौलाना मिन्हाजुद्दीन तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के मद्रसे में दाख़िल हो कर क़ुरआनो हदीस, फ़िक़्ह व कलाम और दीगर उ़लूमे मुरव्वजा के साथ साथ अ़रबी और फ़ारसी पर भी उ़बूर हासिल किया। रोज़ाना एक ख़त्मे क़ुरआन शरीफ़ आप का मा'मूल था। तलबे इल्म में बड़ी लगन और यक्सूई दिखाई। जिस की बिना पर वोह असातिज़ा की तवज्जोह का मर्कज़ बन गए। साथ ही साथ ज़ौक़े रूहानी भी परवान चढ़ने लगा। होनहार तालिबे इल्म का इल्मी इन्हिमाक और रूहानी ज़ौक़ था जिस ने हज़रते शैख़ जलालुद्दीन तबरीज़ी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उन की जानिब मुतवज्जेह किया। शैख़ तबरीज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक अनार बतौरे तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया। बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रोज़े से थे इस लिये तनावुल न कर सके लिहाज़ा उसे दूसरे दरवेशों ने

1.....चिश्ती ख़ानक़ाहें और सर बराहाने बर्रे सग़ीर, स. 50

www.dawateislami.net

खा लिया। बा'दे इफ़्तार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अनार के छिलके में एक दाना अनार मिला। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह दाना खाया तो ऐसा महसूस हुवा कि रूहानिय्यत की रोशनी से उन का वुजूद जगमगा उठा। बा'द में जब येह वाक़िआ बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने मुर्शिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : सारी बरकत और रूहानी फ़ैज़ उसी एक दाने में था। बाक़ी फल में कुछ न था।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खाते वक़्त इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि खाने का कोई मा'मूली ज़र्रा भी ज़ाएअ़ न होने पाए। हो सकता है खाने की सारी बरकत उसी एक लुक़्मे में हो जिसे ज़ाएअ़ कर दिया गया है। लिहाज़ा अगर कभी दस्तर ख़्वान पर कोई ज़र्रा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लेना चाहिये कि बख़्शिश की बिशारत है चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : जो खाने के गिरे हुवे टुकड़े उठा कर खाए वोह फ़राख़ी (या'नी ख़ुशह़ाली) की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद में कम अ़क़्ली से ह़िफ़ाज़त रहती है।[2]

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "रोटी के टुकड़ों और रेज़ों को चुन लीजिये اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ुशह़ाली नसीब होगी। बच्चे सह़ीह़ व

1 .....मह़बूबे इलाही, स. 53 बित्तसर्रुफ़

2 ... کنز العُمّال، کتاب المعیشۃ والعادات، الباب الاوّل فی الاکل، جز:۱۵، ۸/۱۱۱، حدیث:۴۰۸۱۵

www.dawateislami.net

सलामत और बे ऐब होंगे और वोह टुकड़े हूरों का महर बनेंगे।"[1] खाना खाने की सुन्नतें और आदाब सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ "आदाबे त़आम" और रिसाला "खाने का इस्लामी त़रीक़ा" का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शरफ़े बैअ़त का वाक़िआ़

दौराने त़ालिबे इ़ल्मी ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और क़िब्ला रुख़ बैठ कर अपने अस्बाक़ याद किया करते थे। एक मरतबा सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते कुत़बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मदीनतुल औलिया मुल्तान में जल्वा गर हुवे और उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़स्बे आ़दत मुत़ालए़ में मसरूफ़ थे कि एक ख़ुश गवार एह़सास ने आप को नज़र उठाने पर मजबूर कर दिया। नज़र उठने की देर थी कि एक वलिय्ये कामिल के रोशन और नूरानी चेहरे की ज़ियारत से आंखें ठन्डी होने लगीं चुनान्चे, बे साख़्ता एह़तिराम में खड़े हुवे और क़रीब आ कर दो ज़ानू बैठ गए। ह़ज़रते कुत़बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तह़िय्यतुल मस्जिद से फ़ारिग़ हो कर दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या पढ़ रहे हो ? अ़र्ज़ की : फ़िक़्ह की किताब "अन्नाफ़ेअ़" है, फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि इस किताब

1 ....احیاءُ العُلوم، کتاب آداب الاکل، الباب الاوّل فی ما لا بد الخ، ۲/۸

www.dawateislami.net

से नफ़्अ़ होगा ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! नफ़्अ़ तो आप की नज़रे करम से होगा। जवाब सुन कर ह़ज़रते कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत ख़ुश हुवे और शफ़्क़त फ़रमाते हुवे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपने मुरीदों में शामिल फ़रमा लिया । जब ह़ज़रते कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ से रवाना हुवे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी पीछे पीछे चलने लगे येह देख कर ह़ज़रते कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : पहले ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल करो फिर मेरे पास देहली आना क्यूंकि बे इ़ल्म ज़ाहिद शैत़ान का मस्ख़रा होता है !(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना बहुत बड़ी सआ़दत और अफ़्ज़ल इ़बादत है। इ़ल्म की रोशनी से जहालत और गुमराही के अन्धेरों से नजात मिलती है। इ़ल्म ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पहचान ह़ासिल होती है । इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल करने वाले के आ'माल अक्सर औक़ात बजाए दुरुस्ती और सवाब के ख़राब और बाइ़से अ़ज़ाब बन जाते हैं। इ़ल्म के ह़ुसूल की कोशिश करने वाले के लिये अह़ादीसे मुबारका में कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो **अल्लाह** तआ़ला

1.....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 121, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 110 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबुल इल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीनो आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़लमा वारिसे अम्बिया हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बाबा फ़रीद "ह़नफ़ी" हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें सिराते मुस्तक़ीम पर चलने का हुक्म फ़रमाया है और सिराते मुस्तक़ीम वोह है जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़म याफ़्ता बन्दे हों शरई मसाइल में ग़ैरे मुज्तहिद के लिये किसी इमाम की तक़्लीद वाजिब है येही वज्ह है कि बड़े बड़े औलिया व उ़लमा किसी न किसी इमाम के मुक़ल्लिद रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुक़ल्लिद थे जैसा कि ह़ज़रते मह़बूबे इलाही सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : अव्वल मज़हब इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा का है दूसरा मज़हब इमाम शाफ़ेई का है

1 ... ابن ماجة، كتاب السنة، باب فضل العلماء الخ، ١/١٤٥، حديث: ٢٢٣

www.dawateislami.net

तीसरा मज़हब इमाम मालिक का है चौथा मज़हब इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का है। येह चारों मज़हब ह़क़ हैं, किसी क़िस्म का शक न करना चाहिये। इन चारों में इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मज़हब सब से अफ़्ज़ल है। हम इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़हब के पैरूकार हैं क्यूंकि येह मज़हब सवाब और दुरुस्ती पर है। फिर फ़रमाया : जिस त़रह़ मुरीद को अपने पीर का शजरा जानना ज़रूरी है इसी त़रह़ मज़हब का शजरा जानना भी लाज़िम है अगर कोई तुम से पूछे कि तुम कौन से मज़हब के पैरूकार हो ? तो कहना : इमामे आ'ज़म के मज़हब का, और वोह मज़हब ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई और ह़ज़रते अ़ल्क़मा बिन क़ैस का है, और वोह मज़हब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) का है और वोह मज़हब जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है।[1]

सैरो सियाह़त

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ुसूले इ़ल्म और तरबियते नफ़्स के लिये जिन शहरों का त़वील सफ़र इख़्तियार किया उन में उ़रूसुल बिलाद बग़दादे मुअ़ल्ला, बुख़ारा, ग़ज़नी,

1 .....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, राह़तुल कुलूब, स. 226 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बदख़्शां, चिश्त, शाम, ह़रमैने शरीफ़ैन, बैतुल मुक़द्दस, क़न्धार, देहली और मदीनतुल औलिया मुल्तान के नाम नुमायां हैं।[1]

तह़सीले इल्म के लिये सफ़र

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ तह़सीले इल्म की ग़रज़ से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कुछ अ़र्सा तक क़न्धार (अफ़्ग़ानिस्तान) में मुक़ीम रहे। वहां से बग़दाद शरीफ़, शाम, दिमश्क़, सीस्तान, बिलादे ईरान, मर्कज़ुल औलिया लाहोर और बुख़ारा वग़ैरा की सियाह़त इख़्तियार की और मशाइख़े वक़्त से फ़ैज़ पाया। इन में ह़स्बे ज़ैल क़ाबिले ज़िक्र हैं : ह़ज़रते शहाबुद्दीन उ़मर सोहरवर्दी, ह़ज़रते सा'दुद्दीन मुह़म्मद ह़मवी, ह़ज़रते औह़दुद्दीन ह़ामिद किरमानी, ह़ज़रते फ़रीदुद्दीन अ़त्तार नैशापुरी, ह़ज़रते सैफ़ुद्दीन सईद बाख़रज़ी, ह़ज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)[2]

शैत़ान क़ाबू न पा सकेगा

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब बग़दाद ह़ाज़िर हुवे तो पन्दरह दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ान शहाबुद्दीन उ़मर सोहरवर्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बते बा बरकत में रहे और उस का ज़िक्र आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ुद फ़रमाया है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की

1.....ह़याते गंजे शकर, स. 289 ता 295 मुल्तक़त़न

2.....उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया, 15 / 340 बित्तसर्रुफ़, ह़याते गंजे शकर, स. 287 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ज़ियारत इस दुआ गो ने की है और चन्द दिन उन की सोहबत में भी रहा है ।"[1] जब हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी की बारगाह से रुख़्सत होने लगे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तस्नीफ़ "अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़" का क़लमी नुस्ख़ा अ़ता फ़रमाते हुवे येह इरशाद फ़रमाया : शैतान तुम पर क़ाबू न पा सकेगा ।[2]

हज़रते सय्यिदुना सैफ़ुद्दीन बाख़रज़ी की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना सैफ़ुद्दीन सईद बिन मुतह्हर बाख़रज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इमाम व मुहद्दिस और बे मिसाल ज़ाहिद गुज़रे हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना नजमुद्दीन अहमद बिन उ़मर कुब्रा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुरीद थे । हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान से अदा होने वाले कलिमात के बारे में फ़रमाते हैं : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कलिमात मोती की मानिन्द हुवा करते ।[3] जब बुख़ारा में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुलाक़ात हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी सियाह चादर हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इनायत फ़रमाई फिर पूरी तवज्जोह से आप की जानिब नज़र

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 326, ह़याते गंजे शकर, स. 289

2.....अन्वारुल फ़रीद, स. 326

3 ... سیر اعلام النبلاء، الباخرزی سعید بن المطہر الخ، ۱۶/۵۵۵

www.dawateislami.net

फ़रमाई और येह बिशारत दी : येह दरवेश मशाइख़े रोज़गार (या'नी ज़माने के मशाइख़) से होगा और तमाम आ़लम इस के मुरीदों और बच्चों से भर जाएगा।[1]

हम अ़स्र व हम सफ़र

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तह़सीले इ़ल्मे दीन और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ औलियाए किराम के साथ सफ़र किया। जिन औलियाए किराम और सूफ़ियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सोह़बतों से फ़ैज़याब हुवे और राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बने। उन में सरे फ़ेहरिस्त (1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान मरवन्दी ला'ल शहबाज़ क़लन्दर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد, (2) ह़ज़रते सय्यिदुना बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی (3) ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्दूम जलालुद्दीन जहानियां जहांगश्त बुख़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی[2] सूफ़िया की इस्तिलाह़ में इन तीन और चौथे ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **चार यार** कहते हैं।[3]

मुर्शिद की बारगाह में ह़ाज़िरी

तह़सीले इ़ल्मे दीन के बा'द बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मदीनतुल औलिया मुल्तान वापस आए और अपने

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 326

2.....मे'यारे सालिकाने त़रीक़त (सिन्धी), स. 424, तज़किरए औलियाए सिन्ध, स. 206 बि तग़य्युरिन

3.....तज़किरए बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी, स. 111

www.dawateislami.net

मुर्शिद और शैख़ ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार अवशी काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में देहली ह़ाज़िर हुवे और ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पा कर वहीं दरवाज़ए ग़ज़नविय्या के नज़्दीक एक बुर्ज में मुजाहदे में मुन्हमिक हो गए। देहली में इन्हों ने अपने दादा पीर ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन सय्यिद ह़सन संजरी अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर भी रूह़ानी फ़ुयूज़ ह़ासिल किये और कुछ अ़र्से बा'द अपने शैख़ ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुक्म पर चन्द साल हांसी (रियासत हरियाना हिन्द) में मुक़ीम रहे।[1]

सुल्त़ानुल हिन्द की नज़र का कमाल

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा से मुस्तफ़ीज़ होते हुवे दियारे मुर्शिद "देहली" पहुंचे और पीरो मुर्शिद की हिदायात पर मुजाहदों और रियाज़तों में मसरूफ़ हो गए।

एक मरतबा सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه देहली तशरीफ़ लाए तो वालिये हिन्दुस्तान शम्सुद्दीन अल तमश समेत पूरा शहर ज़ियारत व क़दम बोसी के लिये उमड आया, जब सब लोग चले गए तो ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया : तुम ने अपने मुरीद

1.....उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया, 15 / 340

www.dawateislami.net

"फ़रीदुद्दीन मसऊ़द" के बारे में बताया था, वोह कहां है ? ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! वोह इ़बादतो रियाज़त में मश्ग़ूल है। इरशाद फ़रमाया : अगर वोह यहां नहीं आया तो हम उस के पास चलते हैं। ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : हुज़ूर ! उसे यहीं बुलवा लेते हैं, लेकिन ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : नहीं ! हम ख़ुद उस के पास जाएंगे। ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जिस कमरे में मह़्वे ज़िक्रो इ़बादत थे अचानक वहां मसह़ूर कुन ख़ुश्बू फैल गई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने घबरा कर अपनी आंखें खोलीं तो सामने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ियारत का शरफ़ बख़्शते हुवे फ़रमा रहे थे : फ़रीद ! अपनी ख़ुश बख़्ती पर नाज़ करो कि तुम से मिलने सुल्त़ानुल हिन्द तशरीफ़ लाए हैं। ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एह़तिरामन खड़े होने की कोशिश की मगर सख़्त मुजाहदे और रियाज़त से होने वाली कमज़ोरी की वज्ह से लड़ खड़ा कर गिर पड़े, जब उठने की सकत न पाई तो बे इख़्तियार आंसू रवां हो गए। ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दायां बाज़ू जब कि ह़ज़रते बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बायां बाज़ू पकड़ कर ऊपर उठाया फिर ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दुआ़ की : इलाही ! फ़रीद को क़बूल कर और कामिल तरीन दरवेशों के मर्तबे पर पहुंचा। आवाज़ आई : फ़रीद को क़बूल किया, फ़रीद

www.dawateislami.net

फ़रीदे अ़स्र और वहीदे दहर है। इस के बा'द ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इस्मे आ'ज़म सिखाया, अपने सीने से लगाया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को यूं मह़सूस हुवा कि जिस्म आग के शो'लों में घिर गया है फिर येही तपिश आहिस्ता आहिस्ता शबनम की त़रह़ ठन्डी होती चली गई, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आंखों के सामने से कई ह़िजाबात उठ गए, त़वील सियाह़त और सख़्त रियाज़त के बा'द भी जो दौलते इ़रफ़ान ह़ासिल न हो सकी थी वोह ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की एक नज़रे करम से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दामन में समा चुकी थी। उस वक़्त आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की उ़म्र मुबारक तीस बरस थी।[1]

सुल्त़ानुल हिन्द का फ़रमान

एक मरतबा ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने मुरीदों को ले कर अपने मुर्शिद सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, जैसे ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नज़र ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर पड़ी तो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया : कुत़्बुद्दीन ! तुम्हारे

1.....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 444 मुलख़्ख़सन, सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 189 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

दाम में ऐसा शहबाज़ आया है कि सिद्रतुल मुन्तहा के सिवा कहीं क़रार न पकड़ेगा। फ़रीद एक ऐसी शम्अ़ है कि जिस से दरवेशों का ख़ानवादा रोशन होगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गंजे शकर कहने की वज्ह

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को गंजे शकर कहने की कई वुजूहात मश्हूर हैं जिन में से दो मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्चे,

(1) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** में है : ह़ज़रते शैख़ फ़रीदुल ह़क़्क़े वद्दीन गंजे शकर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक मरतबा 80 फ़ाक़े हो चुके थे। नफ़्स भूका था "अल जूअ़ अल जूअ़" (हाए भूक, हाए भूक) पुकार रहा था, उस के बहलाने के लिये कुछ संगरेज़े (या'नी कंकर) उठा कर मुंह में डाले। डालते ही शकर हो गए, जो कंकर मुंह में डालते शकर हो जाता इसी वज्ह से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "गंजे शकर" मश्हूर हैं।[2]

(2) एक मरतबा कुछ सोदागर ऊंटों पर शकर लादे जा रहे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऊंटों पर क्या चीज़ है? एक सोदागर कहने लगा : ऊंटों पर नमक लदा हुवा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : तुम कहते हो तो नमक ही होगा। जब

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 325, सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 189 मुलख़्ख़सन
2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 482

www.dawateislami.net

क़ाफ़िला मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंचा और सामान खोला गया तो उस में शकर के बजाए नमक निकला । येह देख कर सोदागर समझ गए कि येह हमारे झूट बोलने की शामत है, लिहाज़ा उलटे क़दम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : हम से ग़लती हो गई है, मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये, अस्ल में ऊंटों पर नमक नहीं बल्कि शकर थी । येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तुम कहते हो तो शकर ही होगी, सोदागरों ने वापस आ कर देखा तो तमाम नमक शकर में तब्दील हो चुका था ।[1]

आदाबे मुरीदी

हज़रते सय्यिद मुहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने शैख़ुल इस्लाम फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सुना है वोह फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में एक जुरअत अपने पीरो मुर्शिद हज़रते शैख़ कुत़बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने की थी । मुआ़मला कुछ यूं हुवा कि मैं ने एक दफ़्आ़ अपने शैख़ से चिल्ले के लिये गोशा नशीन होने की इजाज़त मांगी । शैख़ कुत़बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि (अभी) इस की ज़रूरत नहीं, इस से शोहरत होती है, हमारे ख़ानदान (चिश्तिया) में त़लबे शोहरत नहीं । मैं ने जवाब दिया : आप के होते हुवे मेरा येह मक़्सूद हरगिज़ नहीं । मैं शोहरत के लिये ऐसा नहीं करना चाहता । हज़रते कुत़बुद्दीन बख़्तियार

1.....अख़्बारुल अख़्यार, स. 53 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 116, गुलज़ारे अबरार मुतर्जम, स. 49 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश रहे। इस वाक़िए के बा'द मुझे बहुत पशेमानी हुई कि मैं ने इस बात का जवाब क्यूं दिया जो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुक्म के मुवाफ़िक़ नहीं था।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस काम से पीरो मुर्शिद मन्अ़ फ़रमा दें उस से बाज़ रहा जाए। किसी तावील से उस की गुन्जाइश न निकाली जाए और न ही उस हुक्म के फ़वाइद व नुक़्सानात पर ग़ौर करें। क्यूंकि मुर्शिदे कामिल हमेशा अपने मुरीदों के लिये बेहतर ही इरशाद फ़रमाते हैं। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : बेकार बातों से तो हर वक़्त परहेज़ होना चाहिये और मुर्शिद के हुज़ूर तो ख़ामोश रहना ही अफ़्ज़ल है। हां ज़रूरी मसाइल पूछने में ह़रज नहीं। औलियाए किराम तो फ़रमाते हैं कि मुर्शिदे कामिल के हुज़ूर बैठ कर ज़िक्र भी न किया जाए कि ज़िक्र में दूसरी त़रफ़ मश्ग़ूल होगा और येह ह़क़ीक़तन मुमानअ़ते ज़िक्र नहीं बल्कि तक्मीले ज़िक्र है कि वोह (जो अपने त़ौर पर) करेगा, बिला तवस्सुल होगा और मुर्शिदे कामिल की तवज्जोह से जो ज़िक्र होगा वोह मुतवस्सल होगा। येह उस से बदरजहा अफ़्ज़ल है। (फिर फ़रमाया :) अस्ल कार हुस्ने अ़क़ीदत है। वोह नहीं तो कुछ फ़ाएदा नहीं और अगर सिर्फ़ हुस्ने अ़क़ीदत है तो ख़ैर इत्तिसाल तो है (फिर फ़रमाया :) परनाले के मिस्ल फ़ैज़ पहुंचेगा। बस हुस्ने अ़क़ीदत होना चाहिये।[2]

1.....फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम, स. 89 बित्तसर्रुफ़

2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 403

www.dawateislami.net

हांसी में क़ियाम

हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देहली को छोड़ कर कुछ अ़र्सा हांसी (रियासत हरियाना हिन्द) में क़ियाम फ़रमाया। एक मरतबा पीरो मुर्शिद की ज़ियारत के लिये देहली हाज़िर हुवे तो उन्हों ने आबदीदा हो कर फ़रमाया : तक़्दीर में लिखा है कि मेरे इन्तिक़ाल के वक़्त तुम मेरी क़ुरबत से महरूम रहोगे, जब लौट कर आओ तो मेरी क़ब्र पर हाज़िरी देना और फ़ातिहा पढ़ना, मैं तुम्हारी अमानत (ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त) क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी चिश्ती के हवाले कर दूंगा। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه देहली से रवाना हो कर हांसी पहुंचे ही थे कि पीरो मुर्शिद के विसाल की ख़बर आ गई। हुक्म की ता'मील करते हुवे फ़ौरन देहली पहुंचे और रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हो कर फ़ातिहा पढ़ी फिर क़ाज़ी हमीदुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त वुसूल करने के बा'द तीन दिन क़ियाम फ़रमा कर हांसी लौट आए, ब वक़्ते रवानगी दीगर ख़ुलफ़ा ने बहुत इसरार किया कि देहली में रह कर पीरो मुर्शिद के फ़ैज़ को आ़म करें, मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं जहां भी रहूं मेरे पीर का फ़ैज़ मुझे पहुंचता रहेगा और मैं उसे आ़म करता रहूंगा।[1]

---

1 .....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 190 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

शोहरत और नामो नुमूद से नफ़रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी शोहरत और नामवरी के लिये कोई काम करना निहायत मज़मूम और ना पसन्दीदा है और कभी किसी बड़े गुनाह का सबब भी बन जाता है। बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم शोहरत के मोहलिक तरीन बातिनी मरज़ से खुद को बचाते और इस के लिये त़रह़ त़रह़ की तदाबीर इख़्तियार फ़रमाते जैसा कि ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शोहरत और नामवरी से नफ़रत किया करते थे यहां तक कि अपने बारे में ता'रीफ़ी कलिमात सुनना भी पसन्द न फ़रमाते चुनान्चे, एक मरतबा देहली में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मौलाना बदरुद्दीन ग़ज़नवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के यहां बयान फ़रमाने तशरीफ़ ले गए लेकिन जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तआ़रुफ़ चन्द ता'रीफ़ी कलिमात से करवाया गया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ौरन वहां से वापस तशरीफ़ ले आए और फिर कभी उन के वा'ज़ की मह़फ़िल में तशरीफ़ न ले गए।

इसी त़रह़ जब देहली में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलायत का शोहरा हुवा तो हिजरत कर के हांसी (रियासत हरियाना हिन्द) में सुकूनत इख़्तियार फ़रमा ली। दौराने क़ियाम एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो वहां मौलाना नूर तुर्क رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमा रहे थे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के रुख़े ज़ैबा पर नज़र पड़ते ही उन्हों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़ज़ाइलो कमालात बयान करना शुरूअ़ कर

www.dawateislami.net

दिये येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले आए और हांसी में क़ियाम का इरादा तर्क फ़रमा दिया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शोहरत के नुक़्सानात और गुमनामी के फ़ज़ाइल की वज्ह से हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی गुमनामी को शोहरत पर तरजीह दिया करते और शोहरत व मर्तबा पाने से ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی इह़याउल उ़लूम में ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی का फ़रमान नक़्ल फ़रमाते हैं कि जो शख़्स लोगों में अपनी शोहरत का त़ालिब हो वोह आख़िरत की लज़्ज़त नहीं पा सकता। इसी त़रह़ शोहरत की इस ख़्वाहिशे बद में दीनो ईमान की तबाही और दो जहां की ज़िल्लतो रुस्वाई का भी शदीद अन्देशा है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : मैं किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जिस ने शोहरत की चाहत की हो और उस का दीन तबाह और वोह ख़ुद ज़लीलो रुस्वा न हुवा हो। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रोते हुवे फ़रमाया : (हाए अफ़्सोस !) मेरा नाम जामेअ़ मस्जिद तक पहुंच गया।[2]

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ इख़्लास के पैकर हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की हुब्बे जाह व मर्तबा से ख़ाली, आ़जिज़ी व इन्किसारी वाली कैसी मदनी सोच हुवा करती थी कि आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद लोगों की जानिब से ना क़दरी और ना

---

1 .....सवानेह़े बाबा फ़रीद गंजे शकर, स. 32 मुलख़्ख़सन, तज़किरए औलियाए पाकिस्तान, 1 / 296 मुलख़्ख़सन

2 ... احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان ذم الشہرۃ الخ، ۳/۳۴۰ ملتقطاً

www.dawateislami.net

शनासी पर भी खुश होते और दुख तक्लीफ़ पहुंचने पर भी रिज़ा मन्द रहते। मगर आह ! हमारी क़ल्बी बदहाली का येह आलम है कि दुन्या में मक़ामो मर्तबा पाने के ह़रीस व ख़्वाहिश मन्द, अपनी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई ही में खुश व खुर्रम और लोगों की जानिब से पज़ीराई ही हमें मह़बूब व पसन्द है। ऐ काश ! हमें भी बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की आ़जिज़ी व इख़्लास पर मुश्तमिल ऐसी मुबारक सोच नसीब हो जाए कि इसी में हमारे लिये दोनों जहां की भलाई है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पाक पतन में जल्वा गरी

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हांसी को ख़ैरबाद कहा और कुछ अ़र्सा आबाई क़स्बा खोतवाल (कोठेवाल) में रिहाइश रखी मगर शोहरत से घबरा कर यहां से भी कूच फ़रमा लिया। येह नूरानिय्यत भरा क़ल्ब जब सफ़र करते हुवे दरियाए सतलज के कनारे एक गुमनाम और छोटी सी जगह "अजूधन" (पाक पतन शरीफ़) की हुदूद में दाख़िल हुवा तो यहां के बाशिन्दों को जोगियों और जादूगरों का मो'तक़िद और दरवेशों से दूर भागता हुवा पाया लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने यहां क़ियाम का फ़ैसला फ़रमाया और जामेअ़ मस्जिद के क़रीब मकान बना कर अहले ख़ाना के साथ रहने लगे उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उ़म्र मुबारक तक़रीबन सत्तर बरस थी। लेकिन जिस त़रह़ मुमकिन नहीं कि मुश्क हो और खुश्बू न फैले, सूरज चमके और उजाला न हो इसी त़रह़ येह मुमकिन न था कि ख़ानदाने चिश्त का येह आफ़्ताबे

www.dawateislami.net

मा'रिफ़त किसी मक़ाम पर चमके और लोग उस की नूरानी किरनों से फ़ैज़याब न हों चुनान्चे, कुछ ही अ़र्से बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की शोहरत चहार सू फैल गई कि पाक पतन में एक ऐसा आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा है जो अपनी नूरानी नज़र डाल कर ज़ाहिरो बातिन को मुनव्वर कर देता है। शोहरत से घबरा कर यहां से भी कूच का इरादा फ़रमाया तो ख़्वाब में पीरो मुर्शिद की जानिब से पाक पतन में ही क़ियाम का हुक्म मिला।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैकर हुवा करते हैं इसी लिये इन के किरदार की मिठास इस क़दर लज़ीज़ और इतनी ख़ुश ज़ाइक़ा होती है कि लोगों का हुजूम इन के गिर्द जम्अ़ रहता है, ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का किरदार भी शहद की त़रह़ मीठा और रेशम की त़रह़ नर्म व मुलायम था।

जोगी की क़बीह़ ह़रकतों का ख़ातिमा

क़ियामे अजूधन (पाक पतन शरीफ़) के इब्तिदाई अय्याम का वाक़िआ़ है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जंगल में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक बूढ़ी औ़रत सर पर दूध की हांडी लिये गुज़री। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : अम्मां कहां से आ रही हो ? कहां जा रही हो ? सर पर क्या है ? उस ने रोते हुवे कहा : ऐ अल्लाह के नेक बन्दे ! इस क़सबे में एक जोगी है जो ग़रीबों पर मुसीबत ढाता है। उस के हुक्म से कोई ज़रा भी सरताबी (ना फ़रमानी) करता है तो वोह उस

1 .....ह़याते गंजे शकर, स. 342 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

पर बला नाज़िल कर के तबाह कर देता है। जिस से जो चाहता है अपने चेलों से मंगवाता है कोई इन्कार नहीं कर सकता। येह दूध उसी के हुक्म पर ले जा रही हूं। अगर न जाऊंगी तो मेरे घर पर जो दूध है सब अभी ख़ून हो जाएगा। इस गुफ़्तगू की वज्ह से जो ताख़ीर हो गई है मा'लूम नहीं इस की क्या सज़ा मिलेगी ? जोगी के ज़ुल्म की दास्तान सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अम्मां को तसल्ली देते हुवे फ़रमाया : बैठ जाइये ! घबराने की ज़रूरत नहीं, येह सारा दूध ख़ुशी से फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दीजिये, आप का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

इसी दौरान जोगी का एक चेला वहां पहुंचा और उस ने बूढ़ी औ़रत को डांटना चाहा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : ख़ामोशी से बैठ जा। वोह जूंही बैठा उस की ज़बान बन्द हो गई। इतने में दूसरा चेला आ पहुंचा। वोह भी ख़ामोश बैठ गया। इसी त़रह़ उस के सारे चेले आते गए और बैठते गए। अगर कोई उठना चाहता तो उठ न पाता। इतने में जोगी भी वहां आ पहुंचा। अपने शागिर्दों की बे बसी देख कर आग बगूला हो गया और जादू के ज़रीए़ उन्हें छुड़ाने की कोशिश करने लगा मगर बे सूद। जब उस का कोई ह़र्बा काम न आया तो बिल आख़िर मजबूर हो कर आ़जिज़ी से कहने लगा : ह़ज़रत ! मेरे शागिर्दों को छोड़ दीजिये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : एक शर्त़ पर रिहाई होगी, तू इस दियार से चला जा और कभी ऐसी ज़ालिमाना ह़रकतों का इरादा भी न करना। जोगी ने शर्त़ मान ली और उसी वक़्त सारा सामान ले कर अजूधन से चला गया। इस

www.dawateislami.net

त़रह़ जोगी के फ़ितने और ज़ुल्म से अजूधन के सादा लोह़ इन्सानों को नजात मिली ।[1]

अख़्लाक़ व सिफ़ात

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उ़लूमे मन्क़ूलात व मा'क़ूलात की आ'ला ता'लीम पाई थी । दीन के अख़्लाक़ी उसूलों पर कामिल दस्त्रस रखते थे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना से वाक़िफ़ थे । घर के दीनी माह़ोल और अकाबिर उ़लमा व सुलह़ा की सोह़बत से उन की ज़ात अख़्लाक़े ह़सना और शाने सिफ़ाते कमालिया की मज़हरे अतम बन गई थी । तवक्कुल व क़नाअ़त, सब्रो रिज़ा, ईसार व अख़्लाक़, इ़बादत व इस्तिग़राक़, ज़ोह्दो तक़्वा, रियाज़त व मुजाहदा, तर्के दुन्या, इस्तिग़्ना, ख़ुश अख़्लाक़ी, शीरीं मक़ाली, ख़िदमते ख़ल्क़ अ़फ़्वो दर गुज़र आप का शेवा बन गया था ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तवाज़ोअ़

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तवाज़ोअ़ व इन्किसारी के पैकर थे अपने इरादत मन्दों के ह़ल्क़े में भी नुमायां मक़ाम पर बैठने से परहेज़ फ़रमाते । मेहमान नवाज़ी के लिये बिला तअम्मुल ज़ह़मत उठाते । एक बार ख़ानक़ाह में कुछ दरवेश आए,

1.....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 190 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 119, मह़बूबे इलाही, स. 61 वग़ैरा

2.....मह़बूबे इलाही, स. 67

www.dawateislami.net

घर में जवार के सिवा कुछ और न था। ख़ुद ही जवार पीसा और रोटियां पका कर दरवेशों की ज़ियाफ़त फ़रमाई।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सादगी

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिस कम्बल पर दिन में बैठते थे उसी को रात के वक़्त अपना बिस्तरे इस्तिराहत बना लेते और तक्ये की जगह सर के नीचे मुर्शिद का अ़सा रख लेते।[2]

अ़फ़्वो दर गुज़र

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बढ़ती हुई मक़्बूलिय्यत और फैलती हुई शोहरत की वज्ह से अजूधन (पाक पतन शरीफ़) का क़ाज़ी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का खुला दुश्मन बन चुका था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और आप के मुतअ़ल्लिक़ीन को रंज व तक्लीफ़ पहुंचाने का कोई मौक़अ़ हाथ से जाने न देता नीज़ शहर भर के उमरा और रुअसा को भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़िलाफ़ भड़काता रहता। लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बुर्दबारी और दर गुज़र का येह आ़लम था कि दुश्मनों के ज़ुल्मो सितम बरदाश्त करते रहते न कभी बदला लिया और न ही कभी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर लाए। चुनान्चे,

1.....मह़बूबे इलाही, स. 71
2.....मह़बूबे इलाही, स. 69

www.dawateislami.net

ज़ालिम का अन्जाम

एक मरतबा उसी क़ाज़ी ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़िलाफ़ एक झूटा सुवाल नामा तय्यार कर के मदीनतुल औलिया मुल्तान के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम से फ़तवा लेना चाहा और लिखा : "ऐसे शख़्स के बारे में क्या हुक्म है जो अहले इ़ल्म होने के बा वुजूद अपनी ह़ालत दरवेशों जैसी बना कर रखे, हर वक़्त मस्जिद में रहे ?" उ़लमाए किराम ने दरयाफ़्त फ़रमाया : उस शख़्स का नाम क्या है ? मजबूरन क़ाज़ी को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम ज़ाहिर करना पड़ा, जिसे सुनते ही उ़लमाए किराम ने फ़रमाया : येह सुवाल नामा दुरुस्त नहीं, तुम उस हस्ती पर इल्ज़ाम लगा रहे हो जिन पर उ़लमा और मुज्तहिद भी उंगली नहीं उठा सकते । क़ाज़ी अपनी इस ह़रकत पर ब ज़ाहिर शरमिन्दा तो हुवा मगर मुख़ालफ़त और ईज़ा रसानी से बाज़ न आया । उस के बुग़्ज़ो इ़नाद की आग मुसलसल भड़कती रही । मुरीदीन और मुतअ़ल्लिक़ीन इस बात की शिकायत करते तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते : सब्र करते हुवे बरदाश्त फ़रमाइये । क़ाज़ी को ज़ुल्मो सितम करते 18 साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया बिल आख़िर ज़ुल्म का सूरज यूं ग़ुरूब हुवा कि एक दिन क़ाज़ी ह़स्बे मा'मूल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शान में ना ज़ेबा कलिमात कह रहा था अचानक उस पर फ़ालिज और लक़्वा का ह़म्ला हुवा और क़ाज़ी उसी वक़्त ज़मीन पर आ गिरा । लोगों ने देखा तो उस का मुंह टेढ़ा हो चुका था, ज़बान सूज चुकी थी और बिल आख़िर वोह मर गया ।[1]

---

1 .....अन्वारुल फ़रीद, स. 244 ता 252 मुलख़्ख़सन, वग़ैरा

www.dawateislami.net

हर नेक बन्दे का एह़तिराम कीजिये

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : वाक़ेई अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ के वलियों की बहुत बड़ी शान होती है । शाने औलिया समझने के लिये येह ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनाचे, सय्यिदुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "थोड़ा सा रिया भी शिर्क है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली से दुश्मनी करे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लड़ाई करता है, **अल्लाह** तआ़ला नेकों, परहेज़गारों, छुपे हुओं को दोस्त रखता है कि ग़ाइब हों तो ढूंडे न जाएं, ह़ाज़िर हों तो बुलाए न जाएं और उन को नज़दीक न किया जाए, उन के दिल हिदायत के चराग़ हों, हर तारीक गर्द आलूद से निकलें।"[1] हमें हर पाबन्दे शरीअ़त मुसलमान का अदबो एह़तिराम करना चाहिये क्यूंकि बा'ज़ लोग गुदड़ी के ला'ल (या'नी छुपे हुवे बुज़ुर्ग) होते हैं और हमें पता नहीं चलता और बसा औक़ात उन की बे अदबी आदमी को बरबादी के अ़मीक़ गढ़े में गिरा देती है चुनान्चे,

गुस्ताख़ का इब्रतनाक अन्जाम

मन्क़ूल है : बारिश थम चुकी थी, मोसिम ठन्डा हो चुका था, सर्द हवा के झोंके चल रहे थे, फटे पुराने लिबास में मल्बूस एक दीवाना टूटे हुवे जूते पहने बाज़ार से गुज़र रहा था । एक

1 ... مِشْكَاة، كتاب الرقاق، باب الرياء والسمعة، ۲/۲۶۹، حديث:۵۳۲۸

www.dawateislami.net

हल्वाई की दुकान के क़रीब से जब गुज़रा तो उस ने बड़ी अ़क़ीदत से दूध का एक गर्म गर्म पियाला पेश किया । उस ने बैठ कर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ कहते हुवे पी लिया और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ कहता हुवा आगे चल पड़ा । एक त़वाइफ़ अपने यार के साथ अपने मकान के बाहर बैठी थी, बारिश की वज्ह से गलियों में कीचड़ हो चुकी थी । बे ख़याली में उस दीवाने का पाउं फिसला जिस से कीचड़ उड़ कर त़वाइफ़ के कपड़ों पर पड़ी । उस के यारे बद अत़्वार को ग़ुस्सा आया, उस ने दीवाने को थप्पड़ रसीद कर दिया । दीवाने ने मार खा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे कहा : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू भी बड़ा बे नियाज़ है ! कहीं दूध पिलाता है तो कहीं थप्पड़ नसीब होता है ! अच्छा, हम तो तेरी रिज़ा पर राज़ी हैं !" येह कह कर दीवाना आगे चल दिया । कुछ ही देर बा'द त़वाइफ़ का यार मकान की छत पर चढ़ा, उस का पाउं फिसला, सर के बल ज़मीन पर गिरा और मर गया । फिर जब दोबारा उस दीवाने का उसी मक़ाम से गुज़र हुवा, किसी शख़्स ने दीवाने से कहा : आप ने उस शख़्स को बद दुआ़ दी जिस से वोह गिर कर मर गया । दीवाने ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कोई बद दुआ़ नहीं दी ।" उस शख़्स ने कहा : फिर वोह शख़्स गिर कर क्यूं मरा ? दीवाने ने जवाब दिया : बात येह है कि अन्जाने में मेरे पाउं से त़वाइफ़ के कपड़ों पर कीचड़ पड़ी तो उस के यार को ना गवार गुज़रा और उस ने मुझे थप्पड़ रसीद किया, जब उस ने मुझे थप्पड़ मारा तो मेरे परवर दगार جَلَّ جَلَالُہٗ को ना गवार गुज़रा और उस बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ ने उसे मकान से नीचे फेंक दिया ।[1]

---

1 .....जन्नती महल का सौदा, स. 7 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

अन्दाज़े तदरीस

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुदर्रिस (Teacher) दर अस्ल वोह जौहरी होता है जो त़लबा (Students) की सलाहिय्यतों को तराश कर हीरे की त़रह़ चमकदार और जाज़िबे नज़र बना देता है और यूं वोह अपनी सलाहिय्यतों को उन में मुन्तक़िल कर के इ़ल्मी असासा मह़फ़ूज़ कर देता है । सलाहिय्यतों की मुन्तक़िली का तमाम तर दारो मदार दर अस्ल "अन्दाज़े तदरीस" पर होता है क्यूंकि पढ़ाने का ख़ूब सूरत अन्दाज़ दिल में उतर जाता और ज़ेह्न में अपनी जगह ख़ुद बना लेता है । ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इ़ल्मे तसव्वुफ़ की मा'रूफ़ किताब "अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़" के पांच अबवाब और इ़ल्मे कलाम की मश्हूर किताब "तम्हीदे अबू शकूर सालिमी" ह़र्फ़न ह़र्फ़न पढ़ी थी ।[1] ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अन्दाज़े तदरीस ऐसा दिलचस्प और उ़म्दा हुवा करता कि सुनने वाले का दिल उस पर क़ुरबान होने को चाहता जैसा कि सुल्त़ानुल मशाइख़ मह़बूबे इलाही ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुस्ने इ़बारत और लत़ाफ़ते तक़रीर ह़ज़रते शैख़ शुयूख़ुल आ़लम फ़रीदुल ह़क़्क़े वद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में इस दरजा थी कि जब कोई सुनता तो इन्तिहाई

1.....फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम, स. 160, अन्वारुल फ़रीद, स. 219

www.dawateislami.net

ज़ौक़ो शौक़ के आ़लम में बे इख़्तियार उस का दिल चाहता कि उस वक़्त मौत आ जाती तो बहुत अच्छा होता।[1]

उ़लूमो फ़ुनून के माहिर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बे शुमार उ़लूमो फ़ुनून से नवाज़ा था। विलायत के मुन्किरीन भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तबह़्ह़ुर और अख़्लाक़े ह़सना के गिरवीदा हो जाया करते थे चुनान्चे, मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ बिन मिन्हाजुद्दीन बुख़ारी जो मा'क़ूलात व मन्क़ूलात के बे नज़ीर फ़ाज़िल थे। शह्र देहली के मग़रिबी मद्रसे में दर्स दिया करते थे। वोह इ़ल्मे बात़िन के शदीद मुन्किर और दरवेशों से सूए बात़िन रखते थे। इत्तिफ़ाक़न उन को चन्द मुश्किल मसाइल पेश आए। मआ़सिर उ़लमा उन इ़ल्मी मुश्किलात को ह़ल करने से क़ासिर थे। इन मसाइल को ले कर मौलाना बदरुद्दीन बुख़ारा के लिये रवाना हुवे दौराने सफ़र अजूधन में क़ियाम किया। उन के हम सफ़र रुफ़क़ा बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत के लिये आमादा हुवे। उन से भी बारगाहे आ़ली में चलने का इसरार किया। मौलाना ने बड़ी बे ए'तिनाई से येह जवाब दिया : तुम जाओ मैं ने बहुत से ऐसे शैख़ देखे हैं, उन की सोह़बत में वक़्त ज़ाएअ़ करने से क्या फ़ाएदा ? लेकिन रुफ़क़ा का इसरार बढ़ा तो मौलाना बदरुद्दीन ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आस्तानए करम पर पहुंचे। थोड़ी देर बा'द बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मौलाना की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई।

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 218

www.dawateislami.net

दौराने गुफ़्तगू तमाम पेचीदा मसाइल ह़ल और इ़ल्मी दक़ाइक़ रोशन हो गए। कश्फ़ और उ़लूमो फ़ुनून की रम्ज़ शनासी ने मौलाना को इस क़दर मुतअस्सिर किया कि मशाइख़ से उन का इन्कार जाता रहा और सच्ची तौबा कर के ह़ल्क़ए इरादत में दाख़िल हो गए। बुख़ारा का इरादा तर्क कर के अजूधन ही में मुक़ीम हो गए। शबो रोज़ बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रह कर फ़ैज़ ह़ासिल करते। जंगल से लकड़ियों का गठ्ठा सर पर लाद कर बावरची ख़ाने के लिये लाते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दामादी और ख़िलाफ़त का शरफ़ मिला।[1]

अन्वारुल फ़रीद में है कि जब बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मस्अला ह़ल फ़रमा दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बे इख़्तियार पुकार उठे : **जिस चीज़ के लिये मैं बुख़ारा जाना चाहता था उस से कई गुना ज़ियादा यहां मिल गया।**[2]

इ़ल्मे शरीअ़त पढ़ने का मक़्सद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ हर काम करने का कोई न कोई मक़्सद होता है इसी त़रह़ इ़ल्मे दीन पढ़ने का सब से नेक मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर उस पर अ़मल करना है चुनान्चे, ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : इ़ल्मे शरीअ़त पढ़ने का मक़्सद उस पर अ़मल करना है न कि लोगों को अज़िय्यत पहुंचाना।[3]

1.....मह़बूबे इलाही, स. 67 2.....अन्वारुल फ़रीद, स. 219
3.....अन्वारुल फ़रीद, स. 223

www.dawateislami.net

तमाम उ़लूम पर उ़बूर

ह़ज़रते ज़ियाउद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपना एक वाक़िआ़ यूं बयान करते हैं : एक दफ़्आ़ मैं ह़ज़रते सय्यिदुना गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, मुझे फ़िक़्ह व नह़्व वग़ैरा से वाक़िफ़िय्यत न थी, बस इ़ल्मे अख़्लाक़ पढ़ाया करता था मेरे दिल में येह ख़याल आया कि ह़ज़रत तो बहुत बड़े फ़ाज़िल हैं और आप की मजलिस में अहले इ़ल्म जल्वा अफ़रोज़ होते हैं, अगर आप ने मुझ से इन उ़लूम से मुतअ़ल्लिक़ पूछ लिया तो मैं क्या जवाब दूंगा ? भरी मह़फ़िल में शरमिन्दगी होगी ? क्या ही अच्छा हो कि ह़ज़रत मुझ से सिर्फ़ उस इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करें जिस पर मुझे उ़बूर ह़ासिल है। मैं अभी येह ही सोच रहा था कि ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरी जानिब मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : मौलाना ! तन्क़ीहे़ मुनाज़रा क्या है ? चूंकि येह सुवाल मेरे मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ था इसी लिये मुझे येह सुन कर बहुत ख़ुशी हुई। मैं ने निहायत उ़म्दगी से उस का जवाब अ़र्ज़ किया। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस सुवाल के जवाब में जो बे नज़ीर तक़रीर फ़रमाई और निकात बयान फ़रमाए वोह कभी मेरे ख़्वाब ख़याल में भी नहीं आए थे। इस से मुझे यक़ीन हो गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को तमाम उ़लूम पर दस्त्रस ह़ासिल है।[1]

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 221

www.dawateislami.net

दिलजूई ने दिल जीत लिया

हज़रते सय्यिदुना फ़सीहुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कई उ़लूम पर उ़बूर ह़ासिल था बल्कि एक मौक़अ़ पर तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी इ़ल्मी सलाहिय्यत का लोहा देहली के उ़लमा से भी मनवा लिया था। इसी लिये पहले आप किसी और आ़लिम को ख़ुद से बरतर न समझते थे। एक दिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इम्तिह़ान लेने पाक पतन आए और आप की बारगाह में आ कर मुनाज़िराना अन्दाज़ में सुवालात करने लगे। हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुनाज़िराना अन्दाज़ पसन्द नहीं फ़रमाते थे लिहाज़ा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश रहे लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुरीदे कामिल हज़रते सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रहा न गया उन्हों ने तमाम सुवालात के निहायत मुदल्लल जवाबात दिये जिस से हज़रते सय्यिदुना फ़सीहुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को सख़्त शरमिन्दा हो कर वापस लौटना पड़ा। इन के जाने के बा'द हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की जानिब मुतवज्जेह हुवे और नाराज़ी से इरशाद फ़रमाया : आप के यूं जवाब देने से उन की दिल आज़ारी हुई है क्यूंकि मौलाना फ़सीहुद्दीन पिन्दारे इ़ल्म में मुब्तला थे और इस के टूटने से उन्हें सख़्त तक्लीफ़ हुई, जाइये और उन की दिलजूई कीजिये। हज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हुक्म की बजा आवरी करते हुवे फ़ौरन हज़रते फ़सीहुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

www.dawateislami.net

के पास तशरीफ़ लाए और मा'ज़िरत की। आप की मा'ज़िरत पर ह़ज़रते फ़सीहुद्दीन ने कहा : "मौलाना ! आप मा'ज़िरत क्यूं कर रहे हैं ? आप ने तो बिल्कुल दुरुस्त जवाबात दिये थे।" ह़ज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : दर अस्ल ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप की दिलजूई को मेरे जवाबात पर तरजीह़ देते थे इसी लिये मेरे जवाबात देने पर नाराज़ हुवे और मुझे मा'ज़िरत करने का हुक्म फ़रमाया। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़सीहुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत मुतअस्सिर हुवे और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ पाक पतन ह़ाज़िर हुवे और बैअ़त की इल्तिजा की। ह़ज़रते फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं इस शर्त़ पर मुरीद करता हूं कि आप अपना पिन्दारे इ़ल्मी बाहर निकाल दीजिये और आयिन्दा किसी से भी बह़्सो मुनाज़िरा न कीजिये, क़ुरआनी हुक्म के मुत़ाबिक़ तब्लीग़े ह़क़ ह़िक्मत से होनी चाहिये न कि दबाव से। बह़्सो मुनाज़िरे में शिकस्त खाने के बा'द दिल में ज़िद व नफ़रत पैदा होती है और ह़क़ क़बूल करने की तौफ़ीक़ जाती रहती है फिर उस दरवाज़े को खोलने में बड़ी देर लगती है। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़ारसी अश्आ़र में जो नसीह़त फ़रमाई उस का तर्जमा कुछ यूं है : "माना कि आप रात भर नमाज़ें पढ़ते हैं और दिन को बीमारों की तीमारदारी करते हैं लेकिन याद रखिये जब तक आप अपने दिल को ग़ुस्सा व कीना से ख़ाली नहीं करेंगे तो येह सब कुछ करना ऐसा ही होगा जैसे एक कांटे पर सेंकड़ों फूलों के टोकरे निछावर कर दिये जाएं।" येह सुन कर ह़ज़रते मौलाना फ़सीहुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बह़्सो

www.dawateislami.net

मुनाज़रे से तौबा की फिर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप को मुरीद फ़रमा लिया।[1]

अमीरे अहले सुन्नत सीरते गंजे शकर के मज़हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इन्सान की ज़बान से अदा किये जाने वाले अल्फ़ाज़ बहुत अहम्मिय्यत रखते हैं क्यूंकि कभी तो येह अल्फ़ाज़ ज़हरीले तीर और शो'लाबार गोले बन कर तबाही व बरबादी का सबब बन जाते हैं और कभी येही अल्फ़ाज़ ख़ुश्बूदार बारिश बन कर तूफ़ान बरपा करने वाली आग को बुझा कर फ़ज़ा को मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर बना देते हैं। ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बान से निकलने वाले अल्फ़ाज़ और आप के ह़िक्मत से भरपूर अन्दाज़ की येह झलक हमें पन्दरहवीं सदी की इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रोज़ मर्रा के मा'मूलात में वाज़ेह़ त़ौर पर दिखाई देती है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़िक्मत से भरपूर नेकी की दा'वत से कई बिगड़े हुवे लोगों की इस्लाह़ हुई बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सेंकड़ों कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दौलत नसीब हुई, आप की ज़बान से निकलने वाले अल्फ़ाज़ ख़ुश्बूदार बारिश बन कर जब भी किसी बद किरदार पर बरसते हैं तो उस के किरदार का उजड़ा चमन हुस्ने अख़्लाक़ के फूलों से महक उठता है, बात़िन का मेल धुल जाता है और वोह

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 224 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

गुनाहों से ताइब हो कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ हो जाता है।

आप जैसा कोई नज़र नहीं आता

सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नवासे ह़ज़रते सय्यिदुना वह़ीदुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अजमेर से पैदल चल कर पाक पतन तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और बैअ़त होने के लिये अ़र्ज़ की, आप ने इरशाद फ़रमाया : मैं तो एक रेज़ा आप के घर से मांग कर लाया हूं, येह ख़िलाफ़े अदब है कि मैं आप से बैअ़त लूं और आप को मुरीद करूं। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना वह़ीदुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आप के क़दमों में गिर गए और निहायत ही आ़जिज़ी से अ़र्ज़ की : ऐ आक़ा ! मुझे आप जैसा कोई नज़र नहीं आता, मैं कहां जाऊं ? किस से बैअ़त करूं ताकि सआ़दत पाऊं ! मैं तो हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा।[1]

सज़ा मुआ़फ़ कर दी

ह़ज़रते ख़्वाजा नसीरुद्दीन मह़मूद चराग़ देहलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक जादूगर ने ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर जादू कर दिया जिस की वज्ह से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه सख़्त बीमार हो गए, न भूक लगती न प्यास और त़बीअ़त पर सख़्त बोझ मह़सूस होता। सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 261

www.dawateislami.net

ख़्वाजा मुहम्मद निज़ामुद्दीन औलिया और हज़रते मौलाना बदरुद्दीन इस्हाक़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) जादू का पता लगाने में मसरूफ़ हो गए आख़िरे कार एक क़ब्र से आटे का पुतला बर आमद हुवा जिस में बहुत सी सूइयां चुभी हुई थीं, दोनों नुफ़ूसे क़ुदसिय्या आटे का वोह पुतला हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में लाए, जूं जूं सूइयां निकाली गईं तूं तूं आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तबीअ़त में बेहतरी के आसार नुमूदार होना शुरूअ़ हुवे यहां तक कि आख़िरी सूई निकलते ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तन्दुरुस्त हो गए। पाक पतन के हाकिम ने उस जादूगर को गिरिफ़्तार कर के आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रवाना कर दिया कि आप ख़ुद ही उस के लिये सज़ा तजवीज़ फ़रमा दें। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे सिह्हत की ने'मत अ़ता फ़रमाई है लिहाज़ा मैं जादूगर को मुआ़फ़ करता हूं। जादूगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हुस्ने अख़्लाक़ से इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि फ़ौरन क़दमों में गिर पड़ा और तौबा-ताइब हो कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुरीदों में दाख़िल हो गया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़फ़्वो दर गुज़र करना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नते मुबारका है और अल्लाह वाले तो सुन्नतों पर अ़मल करने के मुआ़मले में अपनी जान छिड़कते हैं उन की ज़िन्दगी का कोई भी पहलू इत्तिबाए

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 239 ता 242 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

सुन्नत से ख़ाली नहीं होता। येह ह़ज़रात अपनी ज़िन्दगी पर येह उसूल नाफ़िज़ किये रखते हैं कि नेक के साथ नेक और बुरे के साथ भी अच्छा सुलूक करना है, बुराई का जवाब बुराई से देने के बजाए भलाई से देना है ताकि कांटों की जगह फूल खिलें और नफ़रत की जगह मह़ब्बत की दीवार खड़ी हो। दौरे ह़ाज़िर में इस की मिसाल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते गिरामी है जो ख़ुद आगे बढ़ कर अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर रहे हैं।

चुनान्चे, मदनी वसिय्यत नामा सफ़ह़ा 10 और नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा 463 पर वसिय्यत नम्बर 38 ता 40 मुलाह़ज़ा हो : वसिय्यत (नम्बर 38) : मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे, ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं।

वसिय्यत (नम्बर 39) : मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले।

वसिय्यत (नम्बर 40) : क़त्ले मुस्लिम में तीन त़रह़ के हुक़ूक़ हैं (1) ह़क़्क़ुल्लाह (2) ह़क़्क़े मक़्तूल और (3) ह़क़्क़े वुरसा। बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो ह़क़्क़ुल्लाह मुआ़फ़ करने का मुझे इख़्तियार नहीं अल्बत्ता मेरी त़रफ़ से उसे ह़क़्क़े मक़्तूल या'नी मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं। वुरसा से भी दरख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें। अगर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में मुझ पर ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो।

www.dawateislami.net

मज़ीद मा'लूमात के लिये "**मदनी वसिय्यत नामा**" मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बाबा फ़रीद गंजे शकर और मुह़ासबए नफ़्स

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान को बुराई की रग़बत दिलाने वाला और रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करवाने वाला येह नफ़्स ही है जो हर वक़्त साथ रहता और बुराई पर उभारता रहता है । येह जितना त़ाक़तवर होगा इन्सान उतना ही गुनाहों के अ़मीक़ गढ़े में गिरता चला जाएगा लिहाज़ा इस की इस्लाह़ के लिये मुह़ासबा बहुत ज़रूरी है येही वज्ह है कि ह़दीस शरीफ़ में मुह़ासबए नफ़्स को अ़क़्ल मन्दी की अ़लामत क़रार दिया गया है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : समझदार है वोह शख़्स जो अपना मुह़ासबा करे और आख़िरत की बेहतरी के लिये नेकियां करे और अह़मक़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इन्आ़मे आख़िरत की उम्मीद रखे ।[1]

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मशाइख़े हिन्द का मुत्तफ़क़ा फ़ैसला है : "रियाज़त और परवरिशे

1 ... مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث شداد بن اوس، ۶/۷۸، حدیث: ۱۷۱۲۳

www.dawateislami.net

रूह़ में गंजे शकर की मानिन्द कोई दरवेश पैदा नहीं हुवा।"[1] इस के बा वुजूद नफ़्स की इस्लाह़ और मुह़ासबे में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का अन्दाज़ क्या ख़ूब था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भूक की शिद्दत के बा वुजूद ख़्वाहिशे नफ़्स पर क़ाबू पाने के लिये जंगली दरख़्तों के बे मज़ा फल तनावुल फ़रमाते, मुसलसल रोज़े रखने और शब बेदारी की वज्ह से आप निहायत कमज़ोर हो गए थे लेकिन इस के बा वुजूद नफ़्स कुशी और मुजाहदे में कोई कमी नहीं आई बल्कि रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा ही होता रहा और दुन्या से तशरीफ़ ले जाने तक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येही मा'मूल रहा।[2]

सादा और कम खाने की तरबियत

ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दरवेशों की कम और सादा खाने की अ़मली तरबियत फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस ज़माने में ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हां दरवेशों को जिस दिन टेन्ट (ٹے۔ن۔ٹ)[3] और गुले करीर पेट भर खाने को मिल जाते थे वोह ईद का दिन होता था।[4]

1.....गुलज़ारे अबरार मुतर्जम, स. 49

2.....ह़याते गंजे शकर, स. 367

3.....इसे पंजाबी में डेला, हिन्दी में टेन्ट और अंग्रेज़ी में Caper Berry कहते हैं। इसे अचार में भी इस्ति'माल किया जाता है। इसी के फूलों को गुले करीर या गुले करयल कहा जाता है।

4.....अख़्बारुल अख़्यार, स. 52

www.dawateislami.net

नफ़्स की मुख़ालफ़त

ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अंगूर बहुत पसन्द थे । एक मरतबा नफ़्स ने मुत़ालबा किया कि आज अंगूर ज़रूर खाने हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ग़ौरो फ़िक्र करने के बा'द क़सम खाई कि आयिन्दा कभी अंगूर नहीं खाऊंगा और नफ़्स को मुख़ात़ब करते हुवे फ़रमाया : ऐ नफ़्स ! अब तेरी येह आरज़ू कभी पूरी नहीं करूंगा । ह़ज़रते मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो दिन रात बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बत में रहते थे, क़सम खा कर फ़रमाते हैं : ख़्वाजा साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बाक़ी सारी उ़म्र कभी अंगूर नहीं खाए ताकि नफ़्स ग़ालिब न आ जाए ।[1]

सजदों की कसरत

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर बा'ज़ औक़ात ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी होती कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक एक दिन में हज़ार हज़ार सजदे फ़रमाते ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब ज़ाहिर ऐसा मह़सूस होता है कि दुन्यवी आसाइशें छोड़ कर इस क़दर मशक़्क़त और मुजाहदे करना बहुत ही तक्लीफ़ का सबब है जब कि ह़क़ीक़त येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे नफ़्सानी ख़्वाहिशात से ख़लासी

1.....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 496 मुलख़्ख़सन
2.....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 497 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

पा कर राह़त मह़सूस करते हैं और यूं बारगाहे इलाही में कई इन्आ़मात से नवाज़े जाते हैं, मुह़ासबए नफ़्स की बरकत से इन के मल्फ़ूज़ात में वोह ख़ुश्बू पैदा हो जाती है जिस से बे अ़मल इन के क़दमों में खिंचे चले आते हैं, इन की नसीह़त भटके हुवे लोगों के लिये नूरे हिदायत बन जाती है, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का शुमार भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन्ही नेक बन्दों में होता है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुह़ासबए नफ़्स पर उभारने, दुन्या से बे रग़बती बढ़ाने पर मुश्तमिल पुरनूर मल्फ़ूज़ात मुलाह़ज़ा कीजिये :

- जिस्म व तन की (हर) ख़्वाहिश पूरी मत करो कि वोह बहुत मुंह फैलाता है।
- मौत को कभी और किसी जगह न भूलो।
- जो आफ़तो बला आ पड़े उसे नफ़्सानी ख़्वाहिश और गुनाह का नतीजा समझना चाहिये।
- अपनी त़ाक़त व तवानाई पर भरोसा न करो।
- जब ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई तक्लीफ़ तेरी त़रफ़ हो तो उस से ए'राज़ न कर।
- अगर तुम सारी ख़ल्क़ को अपना दुश्मन बनाना चाहते हो तो तकब्बुर की सिफ़त पैदा करो।

लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ात़िर क़र्ज़ न लें

ह़ज़रते मह़बूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक रोज़ नमक मौजूद न था चुनान्चे, मैं ने एक दुकानदार से नमक क़र्ज़ लिया और खाने में डाल दिया, जब खाना ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत

www.dawateislami.net

में पेश किया तो उन्हों ने लुक़्मा उठाया और येह फ़रमाते हुवे वापस रख दिया : आज लुक़्मा भारी महसूस हो रहा है शायद येह खाना मुश्तबा (शुबा वाला) है, येह सुनते ही मेरे जिस्म पर लर्ज़ा त़ारी हो गया, उसी वक़्त अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर ! ब ज़ाहिर कोई वज्ह समझ नहीं आ रही, अगर आप ख़ुद इरशाद फ़रमा दें तो करम नवाज़ी होगी, चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : खाने में नमक कहां से आया ? मैं ने अ़र्ज़ की : एक दुकानदार से उधार लिया है। इरशाद फ़रमाया : लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ात़िर क़र्ज़ लेने से बेहतर है कि दरवेश फ़ाक़े से मर जाए।[1] बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने समझाने के लिये मुबालग़ा करते हुवे येह इरशाद फ़रमाया था वरना ज़रूरतन क़र्ज़ लेने में ह़रज नहीं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम सुवाल करने और क़र्ज़ लेने को अच्छा नहीं जानते इस लिये ख़ुद भी क़र्ज़ लेने से बचते और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को भी बचने की तरग़ीब देते हैं चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शहज़ादियां ह़ाज़िर हुईं और बोलीं : "बाबाजान ! कल ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया : "येही कपड़े जो तुम ने पहन रख्खे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !" "नहीं ! बाबाजान ! आप हमें नए कपड़े बनवा दीजिये" बच्चियों ने ज़िद करते हुवे

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 132 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

कहा । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरी बच्चियो ! ईद का दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !" "बाबाजान ! आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता'ने देंगी कि तुम अमीरुल मोमिनीन की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह कहते हुवे बच्चियों की आंखों में आंसू भर आए । बच्चियों की बातें सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिल भी भर आया । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ाज़िन (वज़ीरे मालिय्यात) को बुला कर फ़रमाया : "मुझे मेरी एक माह की तनख़्वाह पेशगी ला दो ।" ख़ाज़िन ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : جَزَاكَ اللّٰهُ तू ने बेशक उ़म्दा और सह़ीह़ बात कही ।" ख़ाज़िन चला गया । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बच्चियों से फ़रमाया : "प्यारी बेटियो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात को कुरबान कर दो ।[1]

मैं जोड़ने वाला हूं

एक मरतबा ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में एक अ़क़ीदत मन्द ने बत़ौरे तोह़फ़ा क़ैंची पेश की तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने समझाने के लिये इरशाद फ़रमाया : मुझे

1 .....मा'दने अख़्लाक़, हिस्सए अव्वल, स. 257

www.dawateislami.net

क़ैंची न दो, मैं काटने वाला नहीं बल्कि मुझे सूई दो कि मैं जोड़ने वालों में से हूं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ुश्बू में बसी हुई सीरते मुबारका के इस मदनी फूल से भी अहादीसे मुबारका की नफ़ीस और पाकीज़ा ख़ुश्बू आ रही है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान तरीक़े से लेगा और उस को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (1) जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो (2) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआफ़ कर दो और (3) जो तुम से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से मिलाप करो।[2]

सिलए रेहमी से मुतअ़ल्लिक़ एक और फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने मुश्शामे जां मुअ़त्तर कीजिये : तुम लोग एक दूसरे पर हसद न करो और एक दूसरे से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ न करो और एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो। और ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! तुम आपस में भाई-भाई बन कर रहो।[3]

कर भला हो भला

आम तौर पर लोग दौलत और ताक़त के घमन्ड में मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्मो ज़ियादती की इन्तिहा कर देते हैं और इक़्तिदार के

---

1 .....**अल्लाह** के सफ़ीर, स. 337 मुलख़्ख़सन

2 ... معجم اوسط، من اسمه محمد، ۱۸/۴، حدیث: ۵۰۶۴

3 ... مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم التحاسد والتباغض، ص ۱۳۸۴، حدیث: ۲۵۵۹

www.dawateislami.net

नशे में ऐसे बद मस्त हो जाते हैं कि ग़रीब की जाइज़ शिकायात सुनना तो एक त़रफ़ उस का ज़बान खोलना भी अपने वक़ार के ख़िलाफ़ समझते हैं और जब ख़ुद किसी मुसीबत में फंस जाते हैं तो फिर ख़ुदा याद आता है और औलियाउल्लाह के दरवाज़ों पर ह़ाज़िरी देते नज़र आते हैं। ऐसा ही एक वाक़िआ पाक पतन शरीफ़ में एक मुन्शी के साथ पेश आया जो अपने मा तह़्तों और ग़रीब अ़वाम के साथ बद सुलूकी से पेश आता और ज़ुल्मो ज़ियादती करते हुवे बिल्कुल न डरता था इत्तिफ़ाक़न एक बड़ा ओ़ह्दे दार उस से किसी बात पर सख़्त नाराज़ हो गया और मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहानों से उसे परेशान करने लगा। मुन्शी ने उसे मनाने की बहुत कोशिश की मगर नाकामी का मुंह देखना पड़ा। बिल आख़िर मुन्शी ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सिफ़ारिश का त़लबगार हुवा चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सिफ़ारिशी रुक़्आ उसे लिख कर दे दिया मगर उस ओ़ह्दे दार पर सिफ़ारिशी रुक़्ए का कोई असर न हुवा और वोह मुन्शी को मुसलसल सताता रहा बल्कि पहले से भी ज़ियादा परेशान करने लगा। मुन्शी ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में दोबारा ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं तुम्हारी सिफ़ारिश कर चुका हूं मगर इस पर कोई असर नहीं हुवा, शायद कोई मज़लूम तुम्हारे पास भी अपनी फ़रियाद ले कर आया होगा और तुम ने उस की फ़रियाद रसी न की होगी, येह सुनते ही वोह मुन्शी खड़ा हो गया और तौबा करते हुवे येह अ़ह्द किया कि

www.dawateislami.net

आयिन्दा किसी को तंग नहीं करूंगा और जहां तक मुमकिन होगा हर एक की ख़ैरख़्वाही करूंगा अगर्चे फ़रियाद ले कर आने वाले मेरे जानी दुश्मन हों। अभी इस तौबा और अ़हद को चन्द ही दिन गुज़रे थे कि वोही ओ़हदे दार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सिफ़ारिश पर अ़मल न करने की मुआ़फ़ी चाही और मुन्शी से राज़ी हो गया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नसीह़त इरशाद फ़रमाई : अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे अफ़्सर तुम से अच्छा बरताव करें और ख़ुश रहें तो तुम भी अपने मा तह़्तों से अच्छा बरताव करो और मज़्लूमों की फ़रियाद को फ़ौरन पहुंचो वरना तुम्हारी दुआ़ भी क़बूल न होगी।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल न रखने और मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्म करने की वज्ह से भी इन्सान पर मुश्किलात और परेशानियां आती हैं लिहाज़ा त़ाक़त व दौलत के नशे में आ कर न तो किसी ग़रीब व मज़्लूम की बद दुआ़ लेनी चाहिये और न ही किसी बे गुनाह पर ज़ुल्म ढाना चाहिये क्यूंकि मज़्लूम की दुआ़ बहुत जल्द क़बूल होती है और जब येह ज़ालिम व सख़्त दिल शख़्स अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिरिफ़्तार होता है तो उस की सब अकड़ निकल जाती है। हर मुसलमान को चाहिये कि अपने आप को ज़ुल्मो सितम और तमाम बुरे अफ़्आ़ल से बचाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से हर दम डराता रहे कि न जाने उस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है ? सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मज़्लूम की बद दुआ़ से

1 .....ह़याते गंजे शकर, स. 358 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बचो कि येह आस्मानों पर उठाई जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मुझे मेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरी मदद ज़रूर करूंगा अगर्चे कुछ ताख़ीर से हो ।[1]

सख़ावत व बे नियाज़ी

एक मरतबा सुल्त़ान नासिरुद्दीन मह़मूद ने सिपह सालार उलुख़ ख़ान (जो बा'द में ग़ियासुद्दीन बुलबुन के नाम से सुल्त़ान बना) को बहुत सारी नक़्दी और चार गाऊं की मिल्किय्यत का परवाना दे कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में भेजा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : नक़्दी तो मुझे दे दो ताकि मैं इसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दूं जब कि मिल्किय्यत नामा वापस ले जाओ कि तुम्हें इस के बहुत से त़लबगार मिल जाएंगे, फिर मिल्किय्यत नामे के पीछे येह सबक़ आमोज़ तह़रीर रक़म फ़रमाई : "बादशाह हमें गाऊं देगा तो एह़सान जताएगा जब कि राज़िक़े ह़क़ीक़ी बिग़ैर एह़सान जताए हमें दिन रात रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है ।" इस के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सारी नक़्दी ग़रीबों और फ़क़ीरों में तक़्सीम फ़रमा दी । उलुख़ ख़ान ने इसी मौक़अ़ पर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हाथ पर बैअ़त की और बादशाह बनने की बिशारत पाई ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की येही शान होती है कि वोह माले दुन्या से मुस्तग़नी होते हैं और अगर

---

1 ... الترغیب والترھیب، کتاب القضاء، الترھیب من الظلم، ۳/۱۴۲، حدیث: ۲۰

2 .....शाने औलिया, स. 379 मुलख़्ख़सन, उर्दू दाइरए मुआ़रिफ़े इस्लामिया, 15 / 341, सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 145, इक़्तिबासुल अन्वार, स. 469 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

दुन्या का ह़क़ीर माल उन के पास लाया जाए तो उसे फ़ुक़रा और मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दिया करते हैं। औलियाए किराम के विसाल के बा'द उन के मज़ारात पर दिन रात तक़्सीम किया जाने वाला लंगर उन के इस्तिग़्ना, मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़ैरख़्वाही और उन पर शफ़्क़त व मेहरबानी का मुंह बोलता सुबूत है। यक़ीनन जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें दिल का इस्तिग़्ना अ़ता फ़रमाता है। चुनान्चे, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़्मत निशान है : "जिसे आख़िरत का ग़म होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को ग़ना से भर देगा और उस के बिखरे हुवे कामों को समेट देगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी।"(1)

मुरीद हो तो ऐसा !

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बार अपने मुरीद व ख़लीफ़ा मह़बूबे इलाही ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को एक दुआ़ याद करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर इजाज़त हो तो एक मरतबा (याद करने से पहले) आप को सुना दूं ताकि ए'राब वग़ैरा की तस्ह़ीह़ हो जाए। ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इजाज़त अ़ता फ़रमाई। ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने पढ़ना शुरूअ़ किया, एक जगह पीरो मुर्शिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

1 ... ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ماجاء فی صفة اوانی الحوض، ۴/۲۱۱، حدیث: ۲۴۷۳

www.dawateislami.net

ने ए'राब की तस्ह़ीह़ करते हुवे फ़रमाया : इस त़रह़ पढ़िये । जो ए'राब मैं ने पढ़ा था अगर्चे मा'ना के ए'तिबार से वोह भी दुरुस्त था। मैं ने दुआ़ याद कर के पीरो मुर्शिद को इसी त़रह़ सुना दी जैसे आप ने आ'राब बयान फ़रमाया था। मजलिस से बाहर आया तो ह़ज़रते मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मुलाक़ात हुई । उन्हों ने इस अ़मल पर मेरी तह़सीन फ़रमाई । ह़ज़रते मह़बूबे इलाही رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर नह़्व का इमाम सिबवया भी कहे कि येह आ'राब इस त़रह़ है तो मैं उस की बात नहीं मानूंगा बल्कि उसी त़रह़ पढ़ूंगा जैसे मेरे पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया है। ह़ज़रते मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : जिस क़दर ह़ज़रत का आप अदब मल्ह़ूज़ रखते हैं हम में से कोई नहीं रख सकता।[1]

नसीब अपना अपना

एक मरतबा ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का एक मुरीद शिकायत भरे अन्दाज़ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर ! आप की ख़िदमत में रहते हुवे काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया मगर अब तक ख़िलाफ़त की ने'मत से मह़रूम हूं जब कि मेरे बा'द आने वाले कई मुरीद इस ने'मते उ़ज़्मा को पा कर मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में मख़्लूक़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को फ़ैज़ पहुंचाने में मसरूफ़ हैं, ह़ज़रते बाबा

1.....फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम, स. 88 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस की शिकायत बड़े सब्रो तह़म्मुल से सुनी फिर मह़ब्बत भरे लहजे में इरशाद फ़रमाया : "हर शख़्स अपनी क़ाबिलिय्यत और सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ ने'मत पाता है मेरी त़रफ़ से तुम्हारे मुआ़मले में कोई कोताही नहीं हुई, तुम में भी क़ाबिलिय्यत व सलाह़िय्यत होनी चाहिये ताकि ख़िलाफ़त का बार (या'नी बोझ) उठा सको ।" कुछ फ़ासिले पर ईंटों का ढेर था अचानक क़रीबी मकान से एक बच्चा निकला तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से इरशाद फ़रमाया : फ़ुलां मुरीद के लिये एक ईंट उठा लाओ, बच्चा अच्छी सी ईंट उठा लाया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फिर फ़रमाया : फ़ुलां मुरीद के लिये भी एक ईंट उठा लाओ, बच्चा फिर एक अच्छी सी ईंट उठा लाया, अब की बार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी शिकायत करने वाले मुरीद की जानिब इशारा करते हुवे फ़रमाया : अब इस मुरीद के लिये एक ईंट उठा लाओ, बच्चा इस बार एक ख़राब सी टूटी फूटी ईंट उठा लाया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उसी मुरीद से फ़रमाया : देखो ! मैं ने उस बच्चे को ख़राब ईंट लाने के लिये नहीं कहा था तुम्हें जो कुछ मिला वोह तुम्हारा नसीब है इस में मेरी कोई कोताही नहीं, तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा पर राज़ी रहना चाहिये और जो भी ने'मत मिल रही है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये ।[1]

1.....फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम स. 96 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शुक्र आ'ला दरजे की इबादत है, इस की तौफ़ीक़ अ़ज़ीम सआ़दत है और इस में ने'मतों की हिफ़ाज़त भी है चुनान्चे, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : बेशक ! मोमिन मेरे हां मक़ामे ख़ैर पर फ़ाइज़ है और वोह मेरे शुक्र में मसरूफ़ होता है कि (इसी ह़ालत में) मैं उस की रूह़ को उस के पहलूओं के दरमियान से खींच लेता हूं।[1]

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हर इन्सान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें मुसलसल मिलती रहती हैं लिहाज़ा इसे चाहिये कि उन ने'मतों का शुक्र अदा करे। शुक्र का अदना मर्तबा येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाकर्दा ने'मतों में ग़ौर करे, उस की अ़त़ा पर राज़ी रहे और उस की किसी ने'मत की ना शुक्री न करे। जब कि शुक्र की इन्तिहा येह है कि ज़बान से भी उन ने'मतों का शुक्र करे। बिलाशुबा सारी मख़्लूक़ पूरी कोशिश के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत के शुक्र का ह़क़ अदा नहीं कर सकती। इस लिये कि शुक्र की तौफ़ीक़ मिलना भी एक नई ने'मत है लिहाज़ा इस पर भी शुक्र वाजिब है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ... مسند احمد، مسند ابی ہریرہ، ۳/۲۸۵، حدیث: ۸۷۳۹

2 ... رسائل امام غزالي، منهاج العارفين، ص ۲۱۵

www.dawateislami.net

हाथ चूमने की बरकत

एक मरतबा दौराने बयान ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : बहुत सारे गुनाहगार क़ियामत के दिन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की दस्त बोसी की बरकत से बख़्शे जाएंगे और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात ह़ासिल करेंगे। फिर इरशाद फ़रमाया : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को उन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : दुन्या का हर मुआ़मला अच्छा और बुरा मेरे आगे रख दिया, बात यहां तक पहुंच गई कि हुक्म हुवा : इसे दोज़ख़ में ले जाओ, उस हुक्म पर अ़मल होने ही वाला था कि फ़रमान हुवा : ठहरो ! एक दफ़्आ़ इस ने जामेअ़ दिमश्क़ में ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद शरीफ़ जुन्दानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दस्ते मुबारक को चूमा था। उस दस्त बोसी की बरकत से हम ने इसे मुआ़फ़ किया।[1]

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ इन अल्लाह वालों की पाकीज़ा और बा बरकत सोह़बत के क्या कहने कि जिस की बरकत से न सिर्फ़ दुन्या निखरती है बल्कि आख़िरत भी संवर जाती है चुनान्चे, सिने 1406 हिजरी में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पंजाब के मदनी दौरे पर थे कि साहीवाल में एक दहरिये से आप का आमना सामना हो

1 .....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, असरारुल औलिया, स. 382 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

गया। वोह अपने अ़क़ाइदो नज़रियात में बहुत पुख़्ता दिखाई देता था लिहाज़ा बह़्स मुबाह़सा की बजाए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस उम्मीद पर उसे काफ़ी मह़ब्बत व शफ़्क़त से नवाज़ा कि हो सकता है कि हुस्ने अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर वोह अ़क़ाइदे बात़िला से ताइब हो जाए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को पाक पतन शरीफ़ में मुन्अ़क़िद होने वाले इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में बयान करना था, लिहाज़ा वोह भी आप के हमराह चलने पर तय्यार हो गया। ब ज़रीअ़ए बस पाक पतन शरीफ़ पहुंचने के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दी। वोह दहरिया भी आप के साथ साथ था। रात के वक़्त इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में आप ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ करवाई, ह़ाज़िरीन फूट फूट कर रो रहे थे। दौराने दुआ़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रो रो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस की हिदायत के लिये दुआ़ की। जब दुआ़ ख़त्म हुई तो उस दहरिये ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बड़ी अ़क़ीदत का मुज़ाहरा करते हुवे अ़र्ज़ की : दौराने दुआ़ एक अन्जाने ख़ौफ़ के सबब मेरे तो रौंगटे खड़े हो गए, अब मैं ने तौबा कर ली है। फिर उस ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दस्ते मुबारक पर दहरियत से बा क़ाइदा तौबा की और कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ुलामी का पट्टा भी अपने गले में डाल लिया।[1]

1.....इनफ़िरादी कोशिश, स. 101

www.dawateislami.net

दर्से बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर

हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जिन उसूलों पर हज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रूहानी तरबियत फ़रमाई नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जिन बातों की मुस्तक़िल हिदायत फ़रमाते रहते थे, इजमालन दर्जे ज़ैल हैं :

अख़्लाक़ी ता'लीम

❀....अहले हुक़ूक़ के हुक़ूक़ की अदाएगी में कोताही नहीं होनी चाहिये ।

❀....दिल का ज़ंग दूर करना चाहिये, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि लोहे की त़रह़ दिल को भी ज़ंग लग जाता है। क़ुरआन की तिलावत और मौत की याद से दिल की सफ़ाई हो सकती है ।[1]

❀....हर क़िस्म के दरवेश को अपने पास आने देना चाहिये ।

❀....हर शख़्स से ख़ुलूस और हमदर्दी का बरताव होना चाहिये,

❀....जिस इन्सान का दिल कीना, बुग़्ज़, अ़दावत से पाक नहीं वोह मा'रिफ़त की राह में नाकाम रहेगा ।

रूह़ानी ता'लीम

❀....मुजाहदे के बिग़ैर रूह़ानी तरक़्क़ी मुमकिन नहीं ।

❀....इन्सान को किसी सूरत में बेकार नहीं रहना चाहिये ।

1 ... شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ادمان تلاوۃ القرآن، ۲/۳۵۳، حدیث: ۲۰۱۴ ملخصاً

www.dawateislami.net

❁....रोज़ा इन्तिहाई मुअस्सिर इबादत है, नमाज़ नवाफ़िल वग़ैरा आधा रास्ता है, और रोज़ा रखना दूसरा आधा।

❁....तहज्जुद की नमाज़ मुअस्सिर है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हर वक़्त आबदीदा (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाने) और राह़ते दिल की दुआ़ करनी चाहिये।

❁....जिस आंख में आंसू और दर्दे दिल नहीं वोह मह़ब्बते इलाही का मज़ा नहीं चख सकता।

❁....सूरए यूसुफ़ पढ़ने से ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की सआ़दत ह़ासिल होती है।

तन्ज़ीमी हिदायात

❁....ख़िलाफ़त उस शख़्स को देनी चाहिये जो इ़ल्म, अ़क़्ल और इ़श्क़ तीनों का ह़ामिल हो।

❁....ख़िलाफ़त नामों पर लिखने वालों के दस्तख़त़ होने चाहियें, ताकि ख़ुदग़र्ज़ लोग ख़िलाफ़त नामे वज़्अ़ कर के अ़वाम को धोका न दे सकें।

❁....ख़िलाफ़त अस्ल में वोह है जो रूह़ानी इशारे पर दी जाए।

❁....सलात़ीन व उमरा से दूर रहना रूह़ानी सआ़दत के लिये ज़रूरी है।

❁....जो शख़्स उमरा और शहज़ादों से तअ़ल्लुक़ात का दरवाज़ा खोल देता है उस की आख़िरत ख़राब हो जाती है। (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....मह़बूबे इलाही, स. 85

www.dawateislami.net

मुरीद के दरजात की बुलन्दी पर शुक्र

एक मरतबा ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ख़लीफ़ा ह़ज़रते जमालुद्दीन हांसवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बूढ़ी ख़ादिमा ह़ाज़िर हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : हमारा जमाल कैसा है ? बूढ़ी ख़ादिमा ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप के जमाल को बलाओं और भूक ने घेर रखा है, येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुस्कुराए और फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि हमारा जमाल अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है ।[1]

इत्तिबाए शरीअ़त की तल्क़ीन

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने ख़ुलफ़ा और मुरीदीन को वक़्तन फ़ वक़्तन इत्तिबाए शरीअ़त की तल्क़ीन फ़रमाया करते थे कि अपनी ज़बान और हाथ से किसी को मत सताना, न किसी पर त़ा'नो तश्नीअ़ करना, अपने ज़ाहिर को मह़फ़ूज़ रखना, आंख और ज़बान की ह़िफ़ाज़त करना और उन्हें रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ रखना, यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ को दिल में बसाए रखना, ज़िक्रो तिलावत से हमेशा अपनी ज़बान तर रखना और शैत़ानी वस्वसों से दिल को बचाए रखना ।[2]

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 164 मुलख़्ख़सन

2.....शहनशाहे विलायत ह़ज़रते गंजे शकर, स. 31 बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

महरूमी के चार अस्बाब

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक मरतबा इरशाद फ़रमाया : जो आदमी चार चीज़ों से भागता है उस से चार चीज़ें दूर कर दी जाती हैं : जो ज़कात नहीं देता उसे माल से महरूम कर दिया जाता है। जो सदक़ा और कुरबानी नहीं करता उस से आराम छीन लिया जाता है। जो नमाज़ नहीं पढ़ता मरते वक़्त उस का ईमान छीन लिया जाता है और जो दुआ नहीं करता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ईमानो आफ़िय्यत के साथ ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मद्फ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

तू हसन को उठा हसन कर के हो मअल ख़ैर ख़ातिमा या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दरवेशी की शराइत

एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दरवेशी के मौज़ूअ पर मदनी फूल अता करते हुवे इरशाद फ़रमाया : दरवेशी "पर्दापोशी"

1.....हश्त बिहिश्त, राहतुल कुलूब, स. 220 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

को कहते हैं और इस के लिये चार चीज़ें ज़रूरी हैं : (1) आंख को अन्धा करना ताकि दूसरों का ऐब दिखाई न दे। (2) कान को बहरा करना ताकि ग़लत़ बात न सुन सके। (3) ज़बान को गूंगा कर लेना ताकि बेहूदा बात ज़बान से न निकले। (4) पाउं को लंगड़ा कर लेना ताकि गुनाह की जगह न जा सके। इस के बा'द इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स में येह चारों आ़दतें होंगी वोही दरवेश है ख़्वाह उस का लिबास ब ज़ाहिर दुन्यादारों की त़रह़ हो और जिस में येह चारों बातें न हों वोह डाकू और नफ़्स परस्त है। फिर फ़रमाया : येह (दरवेशी की सिफ़ात) हुज़ूरिये दिल से ह़ासिल होती हैं और हुज़ूरिये दिल लुक़्मए ह़राम न खाने से ह़ासिल होता है।[1]

सात सो मशाइख़ का फ़ैसला

एक मरतबा बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : सात सो मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی से सुवाल हुवा कि सब से ज़ियादा दाना कौन है ? तो सब ने येही इरशाद फ़रमाया : दुन्या से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाला। फिर दूसरा सुवाल हुवा कि सब से ज़ियादा बुज़ुर्ग कौन है ? तो सब ने एक ही जवाब दिया : वोह शख़्स जिस की (बात़िनी) ह़ालत किसी भी वज्ह से तब्दील न हो, फिर पूछा गया : सब से बढ़ कर मालदार कौन है ? तो फ़रमाया : क़नाअ़त करने वाला। जब चौथा सुवाल किया गया : सब से

1.....सियरुल अक़्त़ाब मुतर्जम, स. 192 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ज़ियादा मोह़ताज कौन है ? तो सब का एक ही जवाब था कि क़नाअ़त छोड़ देने वाला।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना मुआ़शरे में हर शख़्स नफ़्सा नफ़्सी का शिकार दिखाई देता है, नाम निहाद तरक़्क़ी की इस दौड़ में हर कोई दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है और इस भाग दौड़ में न तो ह़लालो ह़राम की तमीज़ करता है और न ही आख़िरत के नफ़्अ़ व नुक़्सान का ख़याल, यक़ीनन मुआ़शरे में इस बे राह रवी की बड़ी वज्ह "क़नाअ़त" जैसी अ़ज़ीम दौलत से मह़रूमी है, याद रखिये ! क़नाअ़त वोह अ़ज़ीम दौलत है जो फ़क़ीर के पास हो तो उसे बादशाह बना देती है जब कि बादशाह इस से मह़रूमी की सूरत में फ़क़ीर होता है।

क़नाअ़त किसे कहते हैं ?

ख़्वाहिश कर्दा अश्या के न होने के वक़्त मुत़मइन रहना क़नाअ़त कहलाता है।[2] अह़ादीसे मुबारका के रोशन और वसीअ़ ज़ख़ीरे से क़नाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ चन्द क़ीमती मोती मुलाह़ज़ा कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो इस्लाम लाया और उसे ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे क़नाअ़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई तो वोह फ़लाह़ पा गया।[3]

1.....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 139 मुलख़्ख़सन, अख़्बारुल अख़्यार, स. 54 मुलख़्ख़सन

2 ... التعریفات للجرجانی، ص۱۲۶

3 ... ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، ۴/۱۵۶، حدیث: ۲۳۵۵

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़नाअ़त ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होता।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ैरों की मोह़ताजी से बचा कर सिर्फ़ अपना मोह़ताज रखे, चार रोज़ा इस नैरंगिये दुन्या के धोके से मह़फ़ूज़ रखे और मौत से पहले मौत की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी रिज़ा की ख़ात़िर तमाम नेक आ'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और सब्रो क़नाअ़त की दौलत अ़त़ा फ़रमा कर हमें मुफ़्लिसी से बचाए।

न मोह़ताज कर तू जहां में किसी का मुझे मुफ़्लिसी से बचा या इलाही!

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ाहिरो बात़िन एक था

हज़रते मौलाना सय्यिद बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ आख़िर दम तक रहा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ज़ाहिरो बात़िन एक था। ऐसा कभी नहीं हुवा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ल्वत में कोई अ़मल किया हो या कोई बात इरशाद फ़रमाई हो और उसे लोगों के सामने छुपाया हो।[2]

---

1 ...کتاب الزھد للبیھقی، ص۸۸، حدیث: ۱۰۴

2 .....अन्वारुल फ़रीद, स. 131 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

इस्तिक़ामत की दौलत अ़ता फ़रमा दी

ह़ज़रते मह़बूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने हुजरए ख़ास में चेहल क़दमी फ़रमा रहे थे कि मैं इजाज़त ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा तो शफ़्क़त से फ़रमाया : जो चाहते हो त़लब कर लो, मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! इस्तिक़ामत चाहता हूं, चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझे इस्तिक़ामत की दौलत से माला माल कर दिया।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की बारगाह में बार बार ह़ाज़िर होते रहना चाहिये कि न जाने कब उन की निगाहे करम हम बे कसों पर पड़ जाए और हमारी बिगड़ी बन जाए इस ज़िम्न में एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये चुनान्चे,

फ़ौजी अफ़्सर के आंसू

एक इस्लामी भाई ने ह़ल्फ़िया बताया कि तीन फ़ौजी अफ़्सरान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में मुलाक़ात की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुवे तो एक मुबल्लिग़ ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें मदनी माह़ोल की बरकतें बताईं। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आस्ताने में खाने की तरकीब हुई।

उन इस्लामी भाई का कहना है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه खाना तनावुल फ़रमा रहे थे, दीगर अफ़राद भी खाने

1 .....अख़्बारुल अख़्यार, स. 52 मुलख़्ख़सन, मिरआतुल असरार मुतर्जम, स. 781

www.dawateislami.net

में मसरूफ़ थे कि इतने में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ खाने में शरीक एक फ़ौजी अफ़्सर के रोने की आवाज़ सुन कर मैं ने जैसे ही पलट कर देखा तो येह देख कर हैरान रह गया कि फ़ौजी अफ़्सर के पूरे जिस्म पर लर्ज़ा त़ारी था और उस की हिचकियां बंधी हुई थीं। वोह टिकटिकी बांधे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के चहरे मुबारक की ज़ियारत कर रहा था और रोता जा रहा था जब कि निवाला उस के हाथ से गिर चुका था। कमरे में अ़जीब रिक़्क़त अंगेज़ माह़ोल बन गया और हैरत की बात येह थी कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने (अपनी ज़बान से) न तो कोई बयान फ़रमाया और न ही आप ने कोई मल्फ़ूज़ात इरशाद फ़रमाए बल्कि आप तो खाने में मसरूफ़ थे मगर वोह फ़ौजी अफ़्सर सिर्फ़ आप के चेहरए मुबारक को देख देख कर रोए जा रहा था। अल्लाह वालों की ज़ियारत से रिक़्क़ते क़ल्बी (ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से दिल का नर्म होना और आंखों से आंसू जारी हो जाने की कैफ़िय्यत) ह़ासिल हो जाना बहुत बड़ी सआ़दत है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तवक्कुल सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात पर

एक बार ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमारी की ह़ालत में लकड़ी का सहारा ले कर चेहल क़दमी फ़रमा रहे थे कि अचानक रुक गए चेहरए मुबारका का रंग मुतग़य्यर हो गया,

1.....टी वी और मूवी, स. 14 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हाथ में पकड़ी हुई लकड़ी फ़ौरन दूर फेंकी और इरशाद फ़रमाया : कुछ लम्हे पहले मुझे ख़याल आया कि मैं इस लकड़ी के सहारे चल रहा हूं, फिर मैं ने सोचा कि इन्सान का भरोसा सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर होना चाहिये लिहाज़ा मैं ने अ़सा फेंक दिया ताकि मेरा भरोसा सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर रहे। फिर काफ़ी देर तक चेहल क़दमी फ़रमाते रहे मगर चेहरए मुबारका से किसी तक्लीफ़ का इज़्हार न हुवा।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़दाते मुबारका

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी 93 सालह गुलशने ह़यात को इ़बादतो रियाज़त के महकते फूलों से सजाया और प्यारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का गहवारा बनाया। इस मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर गुलशने ह़यात के चन्द मदनी फूलों से आंखों को ठन्डा कीजिये।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रह़म दिली और ह़ुस्ने अख़्लाक़ जैसे उ़म्दा औसाफ़ के मालिक थे लोगों की दिलजूई और दिलदारी में त़ाक़त भर कोशिश फ़रमाया करते थे जो मुसीबत ज़दा ह़ाज़िर होता उस से इतनी हमदर्दी और मह़ब्बत से मिला करते थे कि उसे अपने मुसीबत ज़दा होने का एह़सास ही न रहता, छोटों पर निहायत शफ़्क़त फ़रमाया करते, कोई ग़लत़ी कर बैठता और उ़ज़्र पेश करता

1.....जवाहिरे फ़रीदी, स. 303 वग़ैरा

www.dawateislami.net

तो उस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लेते, अगर कोई आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ज़ुल्मो ज़ियादती का निशाना बनाता तो इन्तिक़ाम न लेते और मुआ़फ़ कर दिया करते। न तो किसी पर इ़ल्मी बड़ाई जताते और न ही किसी से बह़्सो मुबाह़सा करते और फ़रमाया करते थे कि इ़ल्म अ़मल करने के लिये पढ़ना चाहिये न कि झगड़ा करने के लिये। इसी त़रह़ अपने कलाम को बनावट और नुमाइश से पाक रखने के साथ साथ नुक्ता चीनी और दिल आज़ार गुफ़्तगू से भी परहेज़ फ़रमाया करते थे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़र्ज़ बिल्कुल न लेते चाहे फ़ाक़ा ही क्यूं न करना पड़ जाता ! मुरीद साथ होते तो बत़ौरे आ़जिज़ी उन के आगे आगे न चलते, अक्सरो बेश्तर मुरीदीन और मो'तक़िदीन को इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूलों से नवाज़ा करते, मुरीदों के सामने भी अपनी बात़िनी कैफ़िय्यत छुपाया करते यहां तक कि अपना नाम ज़ाहिर किये बिग़ैर अपने ही ह़िक्मत भरे वाक़िआ़त बयान फ़रमा दिया करते थे।

फ़ज्र और मग़रिब के बा'द ख़ास वज़ाइफ़ पढ़ा करते जब कि बा'दे नमाज़े अ़स्र सय्याह़ों और मुसाफ़िरों से मुलाक़ात फ़रमाया करते थे। किसी जगह तशरीफ़ ले जाते तो मुरीद या अहले मह़ब्बत के घर ठहरने के बजाए मस्जिद में क़ियाम फ़रमाते। ख़ुद भी निहायत सख़्ती से जमाअ़त की पाबन्दी करते और अपने मुरीदों को भी बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की तल्क़ीन व नसीह़त फ़रमाया करते।[1]

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 349 ता 351 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बिलानागा ग़ुस्ल फ़रमाते

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कभी पाउं फैला कर चार ज़ानू (आलती पालती मार कर) न बैठते, हमेशा दो ज़ानू ही बैठा करते थे अगर थक जाते या कुछ तक्लीफ़ होती तो दोनों घुटने खड़े कर के पिन्डलियों के गिर्द दोनों हाथों का हल्क़ा बना कर एक हाथ से दूसरा हाथ थाम लेते और सर मुबारक घुटनों पर रख लेते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه साफ़ सुथरा रहना पसन्द फ़रमाया करते थे येही वज्ह थी कि हर रोज़ ग़ुस्ल करना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मा'मूलात में शामिल था।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की सीरते मुबारका कितने प्यारे और महकते हुवे मदनी फूलों का गुलदस्ता है, रोज़ाना नहाना और अपने जिस्म व लिबास को साफ़ सुथरा रखना न सिर्फ़ जिस्मानी ए'तिबार से फ़ाएदा मन्द है बल्कि इस में दीनी फ़वाइद भी बे शुमार हैं ख़ास तौर पर नेकी की दा'वत देने वालों के लिये कि अपना हुल्या सुन्नतों के सांचे में ढाल कर ऐसा सुथरा और निखरा रखें कि लोग देख कर घिन न खाएं बल्कि उन की जानिब माइल हों और अच्छे माहोल से वाबस्ता हो कर क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मसरूफ़ रहें। पाकीज़ा और नूरानी फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा कर के अपने दिलों से मैल कुचैल दूर कर के उन्हें पाक

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 139 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

साफ़ कीजिये चुनान्चे, मुअ़ल्लिमे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है, पाकी पसन्द फ़रमाता है, सुथरा है, सुथरापन पसन्द करता है।[1] एक और मक़ाम पर सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है।[2]

मेरी हर हर अदा से या नबी सुन्नत झलकती हो

जिधर जाऊं शहा ख़ुश्बू वहां तेरी महकती हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बाबा फ़रीद का लिबास

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इ़ल्मो अ़मल का पैकर होने के बा वुजूद पूरी ज़िन्दगी निहायत सादगी से गुज़ारी, कसरत से तोह़्फ़े तह़ाइफ़ और दिरहमो दीनार आते लेकिन आ़म तौ़र पर निहायत सादा और बोसीदा कपड़े पहनना पसन्द फ़रमाते, कपड़े फट जाते तो अक्सर ख़ुद ही सी लिया करते। एक रोज़ किसी शख़्स ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में नया कुरता पेश किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस का दिल रखने की ख़ात़िर उस कुरते को ज़ैबे तन फ़रमा लिया, लेकिन कुछ देर बा'द अपने छोटे भाई ह़ज़रते नजीबुद्दीन मुतवक्किल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह कहते हुवे

---

1 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی النظافۃ، ۴/۳۶۵، حدیث: ۲۸۰۸

2 ... مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، ص ۱۴۰، حدیث: ۲۲۳

www.dawateislami.net

अ़ता फ़रमा दिया : मुझे पुराना कपड़ा पहन कर जो सुकून मिलता है वोह नए कपड़ों में नहीं मिलता।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰه रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर पुराना कपड़ा पहनने वालों की ख़ुश बख़्ती कि ह़दीसे पाक में इसे ईमान की अ़लामत क़रार दिया है चुनान्चे, सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर वक़ार है : क्या तुम नहीं सुनते बेशक पुराने कपड़े पहनना ईमान से है बेशक पुराने कपड़े पहनना ईमान से है।[2]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में इरशाद फ़रमाते हैं : इस का मत़लब (येह है कि) मा'मूली लिबास फटे पुराने कपड़े पहनने से शर्म व आ़र न होना, कभी पहन भी लेना मोमिन मुत्तक़ी की अ़लामत है, हमेशा आ'ला दरजे के लिबास पहनने का आ़दी बन जाना कि मा'मूली लिबास पहनते शर्म आए त़रीक़ा मुतकब्बिरीन का है। यहां ईमान से मुराद कमाले ईमान है।[3]

मैं उ़म्दा लिबास पहनने से क़तराता हूं

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

---

1 .....अख़्बारुल अख़्यार, स. 52 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

2 ... ابوداؤد، کتاب الترجل، ۴/۱۰۲، حدیث: ۴۱۶۱

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 109 बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

उ़मूमन सादा और सफ़ेद लिबास पसन्द फ़रमाते हैं जब कि सर पर छोटे साइज़ का सादा सब्ज़ इ़मामा बांधते हैं। एक मरतबा इस की ह़िक्मत बयान करते हुवे फ़रमाया : मैं उ़म्दा लिबास पहनना पसन्द नहीं करता ह़ालांकि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से बेहतरीन लिबास पहन सकता हूं। मुझे तोह़्फ़े में भी निहायत क़ीमती और चमकदार क़िस्म के कपड़े दिये जाते हैं लेकिन मैं ख़ुद पहनने के बजाए किसी और को दे देता हूं क्यूंकि एक तो मेरे मिज़ाज में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सादगी अ़त़ा फ़रमाई है, दूसरा मेरे पीछे लाखों लोग हैं अगर मैं महंगे तरीन लिबास पहनूंगा तो येह भी मेरी पैरवी करने की कोशिश करेंगे। मालदार इस्लामी भाई तो शायद पैरवी करने में कामयाब हो भी जाएं लेकिन मेरे ग़रीब इस्लामी भाई कहां जाएंगे ? इस लिये मैं अपने ग़रीब इस्लामी भाइयों की मह़ब्बत में उ़म्दा लिबास पहनने से कतराता हूं।[1]

ह़ज़रते बाबा फ़रीद का बिस्तर

ह़ज़रते मह़बूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने इस्ति'माल में एक चादर रखा करते थे जिसे ज़मीन पर बिछा कर तशरीफ़ फ़रमा हो जाते, रात आती तो उसे चारपाई पर बिछा लेते वोह चादर इस क़दर छोटी थी कि सिरहाना (तक्या) ढांपते तो पाईंती (या'नी चारपाई का पाउं की जानिब वाला ह़िस्सा) ख़ाली

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 53 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हो जाता और पाईंती की जानिब खींचा जाता तो सिरहाना ख़ाली रह जाता और जब कभी वोही चादर ओढ़ कर आराम फ़रमाते तो पाउं इस से बाहर रह जाते।[1]

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सद हज़ार आफ़रीं उन मुबारक हस्तियों पर जिन्हों ने ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये शाही शानो शौकत, महल्लातो बाग़ात, ग़ुलामो ख़ुद्दाम और दुन्यावी ज़ेबो ज़ीनत को ठुकरा कर सादगी व आजिज़ी इख़्तियार की, भूक व प्यास की मुसीबतें हंस कर बरदाश्त कीं और कभी भी हर्फ़े शिकायत लब पर न लाए। यक़ीनन इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने आख़िरत की क़दर जान ली थी, इन पर दुन्या की हक़ीक़त आश्कार हो चुकी थी कि दुन्या बे वफ़ा है इस की ने'मतें ज़वाल पज़ीर हैं और इन आरिज़ी लज़्ज़तों की ख़ातिर दाइमी ख़ुशियों को नज़र अन्दाज़ कर देना अक़्ल मन्दों का काम नहीं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन समझदार लोग वोही हैं जो बाक़ी रहने वाली ख़ुशियों को फ़ानी ख़ुशियों पर तरजीह देते हैं और दुन्यावी मसाइब व तकालीफ़ को सब्रो शुक्र के साथ बरदाश्त करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी आ'माले सालेहा पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए और हर हाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....फ़वाइदुल फ़वाद मुतर्जम स. 127 वग़ैरा

www.dawateislami.net

इफ़्तारी का सामान

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अक्सर रोज़ा रखा करते थे। इफ़्तार के वक़्त ख़ादिम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये एक गिलास पानी में मुनक़्क़ा के चन्द दाने डाल कर शरबत की सूरत में पेश कर दिया करता जिस में से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आधा बल्कि दो तिहाई तो मुरीदों को अ़ता फ़रमा देते और बाक़ी ख़ुद नोश फ़रमा लिया करते और कभी कभार किसी की त़लब पर इस में से भी कुछ बचा कर अ़ता फ़रमा देते। अगर घर में आटा होता तो दो रोग़नी रोटियां पेश कर दी जातीं, एक रोटी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ाज़िरीन में तक़्सीम फ़रमा देते जब कि दूसरी ख़ुद तनावुल फ़रमाते और बा'ज़ औक़ात इस में से भी कुछ ह़िस्सा मुरीदों को अ़ता फ़रमा देते।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी शोहरए आफ़ाक़ तालीफ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 792 पर इरशाद फ़रमाते हैं : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की नफ़्स मारने की अदाएं मरह़बा ! इन्हों ने मुनक़्क़ा का ख़ूब इन्तिख़ाब फ़रमाया। सूखे हुवे छोटे अंगूर किश्मिश और सूखे हुवे बड़े अंगूर मुनक़्क़ा कहलाते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : इसे खाओ येह (मुनक़्क़ा) बेहतरीन खाना है, (मुनक़्क़ा) आ'साब (या'नी नसों और पठ्ठों) को मज़बूत़ करता, कमज़ोरी को

1 .....अख़्बारुल अख़्यार, स. 52 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

दूर करता गुस्से को ठन्डा करता, बलग़म को दूर करता, चेहरे की रंगत निखारता और मुंह को ख़ुश्बूदार करता है।[1]

किश्मिश का पानी पीना सुन्नत है

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये किश्मिश भिगोई जाती थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस का पानी उस रोज़, दूसरे रोज़ और बा'ज़ औक़ात उस के बा'द वाले दिन शाम तक भी नोशे जान फ़रमाते। इस के बा'द उस के बारे में हुक्म फ़रमाते तो ख़ादिमीन उसे पी लेते या उसे बहा दिया जाता। (क्यूंकि बा'द में उस में तग़य्युर आ जाता, इस लिये बहा दिया जाता)।[2]

मुनक़्क़ा दवा भी है और ग़िज़ा भी, इस को चाहें तो यूंही या चाहें तो छिलका उतार कर मुनासिब मिक़्दार में खा लीजिये मश्हूर मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिसे अहादीसे मुबारका हिफ़्ज़ करने का शौक़ हो वोह (मुनासिब मिक़्दार में) मुनक़्क़ा खाए, मुनक़्क़े बीज समेत भी खा सकते हैं बल्कि इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुनक़्क़े के बीज मे'दे की इस्लाह करते हैं।

मुनक़्क़े चन्द घंटे पानी में भिगो कर रख दीजिये फिर इस का छिलका उतार कर गूदा निकाल लीजिये। मुनक़्क़ा का

1 ... کشف الخفاء، حرف الکاف، ۲/۱۰۶، حدیث: ۱۹۴۷

2 ... ابوداؤد، کتاب الاشربۃ، باب فی صفۃ النبیذ، ۳/۴۶۹، حدیث: ۳۷۱۳

www.dawateislami.net

गूदा फेफड़ों के लिये इक्सीर और पुरानी खांसी के लिये मुफ़ीद है। गुर्दा और मसाने के दर्द को मिटाता, जिगर और तिल्ली को ताक़त देता, पेट को नर्म करता, मे'दा मज़बूत करता और हाज़िमा दुरुस्त करता है।[1]

मिल कर खाना खाओ

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ानक़ाह में कई अफ़राद एक ही थाल में खाना खाया करते थे चुनान्चे, हज़रते निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मुझे बारगाहे मुर्शिद से हुक्म था कि जमालुद्दीन और बदरुद्दीन इस्हाक़ (قُدِّسَ سِرُّهُمَا) के साथ एक ही बरतन में खाना खाया करूं।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मिल कर खाना खाने से दीनी और दुन्यावी दोनों त़रह़ के फ़वाइद ह़ासिल होते हैं चुनान्चे, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है कि इकठ्ठे हो कर खाओ अलग अलग न खाओ कि बरकत जमाअ़त के साथ है।[3]

सेर होने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना वह़्शी बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने दादाजान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि सह़ाबए किराम

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 793 मुल्तक़त़न

2.....अन्वारुल फ़रीद, स. 134 मुलख़्ख़सन

3 ... ابنِ ماجَة، کتاب الاطعمة، باب الاجتماع علی الطعام، ۲/۲۱، حدیث: ۳۲۸۷

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम खाना तो खाते हैं मगर सेर नहीं होते ! सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम अलग अलग खाते होगे ? अ़र्ज़ की : जी हां । फ़रमाया : मिल बैठ कर खाना खाया करो और بِسْمِ اللّٰہ पढ़ लिया करो तुम्हारे लिये खाने में बरकत दी जाएगी ।[1]

मिल कर खाने में मे'दे का इलाज

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं : पेथोलोजी के एक प्रोफ़ेसर ने इन्किशाफ़ किया है जब मिल कर खाना खाया जाता है तो सब खाने वालों के जरासीम खाने में मिल जाते हैं और वोह दूसरे अमराज़ के जरासीम को मार डालते हैं नीज़ बा'ज़ औक़ात खाने में शिफ़ा के जरासीम शामिल हो जाते हैं जो मे'दे के अमराज़ के लिये मुफ़ीद होते हैं ।[2]

निकाह़ का वाक़िआ़

621 हिजरी / 1215 ईसवी में ह़ज़रते ख़्वाजा बख़्तियार काकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को निकाह़ की तल्क़ीन फ़रमाई तो निगाहें झुका कर अदबो एह़तिराम

1 ... ابوداؤد، کتاب الاطعمۃ، باب فی الاجتماع علی الطعام، ۳/۴۸۶، حدیث: ۳۷۶۴

2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 199 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

के साथ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : डरता हूं कि अगर औलाद ना फ़रमान निकली तो बरोज़े क़ियामत बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में शरमिन्दगी होगी, येह सुन कर ह़ज़रते ख़्वाजा बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : जो औलाद अच्छी हो वोह तुम्हारी और जो बुरी निकले उसे हमारे सिपुर्द कर देना, उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने और हम जानें, पीरो मुर्शिद की ज़बाने अक़्दस से येह कलिमात सुन कर ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ुशी की इन्तिहा न रही फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सुन्नते निकाह़ अदा की।[1]

सब्रो तवक्कुल का घराना

ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का घराना सब्रो तवक्कुल का ज़िन्दा नुमूना था। बड़े बड़े उमरा व सलात़ीन की जानिब से क़ीमती तह़ाइफ़ और दिरहमो दीनार आते मगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन्हें फ़ौरन फ़ुक़रा और मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा देते और अपने अहलो इ़याल के लिये कुछ बचा कर न रखते, फ़क़्रो फ़ाक़ा और तंगदस्ती का येह आ़लम था कि घर में इस्ति'माल की मा'मूली चीज़ें भी न होतीं, जंगली फलों पर ही अहलो इ़याल का गुज़ारा होता था और वोह भी पेट भर न होता, मज़ीद फ़रमाते हैं कि एक बार रमज़ानुल मुबारक में ह़ाज़िरी की सआ़दत से बहरा मन्द हुवा तो देखा कि ह़ाज़िरीन के सामने जो खाना रखा है वोह सब के

1.....ह़याते गंजे शकर, स. 380 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

लिये नाकाफ़ी है, मुझे अच्छी त़रह़ याद है कि मैं एक दिन भी शिकम सेर हो कर न खा सका था।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 1 सफ़ह़ा 655 पर फ़रमाते हैं : हमारे यहां उ़मूमन दिन में तीन बार खाने का मा'मूल है। अगर्चे येह गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं, खाने पीने के शौक़ ने येह अन्दाज़ दिया है। येह बात ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जो जितना ज़ियादा खाएगा क़ियामत में ह़िसाब उस के ज़िम्मे उतना ही ज़ियादा आएगा। रोज़ाना एक बार खाना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते आ़दिय्या है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस सुन्नत पर अ़मल करते हुवे कई बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का दिन में सिर्फ़ एक बार खाने का मा'मूल रहा है। ता हम अगर कोई शख़्स इस सुन्नत पर अ़मल न करे तो उस को मलामत नहीं की जाएगी। हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक शरीफ़ इख़्तियारी थी, चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये येह पेश फ़रमाया कि मेरे वासित़े मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों को सोने का बना दिया जाए, मगर मैं ने अ़र्ज़ किया : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तो येह पसन्द है कि अगर एक दिन खाऊं, तो दूसरे दिन

---

1 .....सवानेह़े बाबा फ़रीद गंजे शकर, स. 33 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

भूका रहूं, ताकि जब भूका रहूं तो तेरी त़रफ़ गिर्या व ज़ारी करूं और तुझे याद करूं और जब खाऊं तो तेरा शुक्र व ह़म्द करूं।[1]

सलाम उन पर शिकम भर कर कभी खाना न खाते थे

सलाम उन पर ग़मे उम्मत में जो आंसू बहाते थे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इबादत व इस्तिग़राक़

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इशा की नमाज़ पढ़ कर तमाम रात इबादत और इस्तिग़राक़ में मश्ग़ूल रहते थे, रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना रात को दो क़ुरआने मजीद ख़त्म किया करते थे।[2] इस सिलसिले में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं 30 साल तक इस क़दर मुजाहदात में मश्ग़ूल रहा कि न दिन को दिन समझा, न रात को रात। दिन भर तिलावते क़ुरआन से अपनी ज़बान तर रखता जब कि रात भर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करता और नवाफ़िल व इबादत में मसरूफ़ रहता था।[3]

रियाज़ात व मुजाहदात

इब्तिदा में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सौमे दावूदी (या'नी एक दिन छोड़ कर रोज़ा) रखा करते थे एक दिन ह़ज़रते शैख़ अ़ली

1 ... ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، ۴/۱۵۵، حدیث: ۲۳۵۴

2 .....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाद, स. 645

3 .....सवानेहे बाबा फ़रीद गंजे शकर, स. 38 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मेरठी बाबा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ लाए, खाना खाते वक़्त दिल में ख़याल आया अगर ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) रोज़ाना रोज़ा रखते तो कितना अच्छा होता, ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नूरे बात़िनी से येह बात जान ली लिहाज़ा फ़रमाया : आज से अ़ह्द करता हूं कि हमेशा रोज़ा रखा करूंगा फिर अपने इस अ़ह्द पर आख़िरी उ़म्र तक क़ाइम भी रहे।[1]

बारगाहे फ़रीदी का जलाल

जब ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुरीदों और ख़िदमतगारों के दरमियान जल्वा फ़रमा होते तो रो'ब व जलाल का येह आ़लम होता कि लोग दो ज़ानू और दस्त बस्ता बैठे रहते इन की आंखें झुकी होतीं जब कि कभी कभार इस क़दर ख़ामोशी त़ारी होती कि लोगों के सांसों की आवाज़ साफ़ सुनाई देती।[2]

त़रीक़ए बैअ़त

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इस्लाह़ी जिद्दो जहद का आग़ाज़ दीनी तरबियत से होता था शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी ज़रा बरदाश्त न करते, अरकाने इस्लाम की पाबन्दी पर बहुत ज़ोर देते और मुरीद करते वक़्त हर एक से येह अ़ह्द लिया करते कि "मैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से अ़ह्द करता हूं कि अपने हाथ, पाउं

1.....सवानेहे बाबा फ़रीद गंजे शकर, स. 39
2.....अल्लाह के सफ़ीर, स. 315 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

और आंखों को ख़िलाफ़े शरअ़ बातों से बचाऊंगा और अह़कामे शरीअ़त बजा लाऊंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ[1]

मदनी तरबियत गाह

लोगों की इस्लाह़ व तरबियत का काम करने वाले इस ह़क़ीक़त को ब ख़ूबी जानते हैं कि इन्सान के किरदार की बनावट और उस के अफ़्कार व एह़सासात की बुलन्दी व पस्ती में उस के माह़ोल का भी बड़ा असर होता है। अगर माह़ोल तब्दील न किया जाए तो इस्लाहे़ बात़िन की तमाम तर कोशिशें भी अक्सर राएगां हो जाती हैं इसी वज्ह से मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अपने मुरीदों को अपनी सोह़बत का शरफ़ बख़्शा करते और ख़ानक़ाहों और मदनी तरबियत गाहों का इन्तिज़ाम फ़रमाया करते थे ताकि हर आने वाला इन मदनी तरबियत गाहों में अच्छी सोह़बत, दीनदारी, तक़्वा और ख़ुलूस के साथ साथ शैख़ की नूरानी मह़ब्बत की चाश्नी का ज़ाएक़ा चखे। येही वज्ह थी कि इन में दाख़िल हो कर बड़े बड़े गुनाहगारों के ख़यालात यक दम बदल जाते और दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता था। चुनान्चे, ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़ानक़ाह में नए आने वालों के साथ पूरे ख़ुलूस और हमदर्दी का बरताव किया जाता जिस से उन के दरमियान भाईचारे और मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम हो जाती और वोह ख़ानक़ाह के मदनी माह़ोल में पूरी त़रह़ ढलने के लिये ज़ेह्नी त़ौर पर तय्यार हो जाते।[2]

1.....ह़याते गंजे शकर, स. 476

2.....ह़याते गंजे शकर, स. 477 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ख़ानक़ाहे फ़रीदी का उसूल

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने ख़ुलफ़ा को दूसरे बुज़ुर्गों की ख़िदमत में भेजा करते ताकि एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाए और दीने इस्लाम की रोशनी फैलाने का काम आसान हो जाए नीज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने अस्ह़ाब को फ़ारिग़ न रखते और कोई न कोई ख़िदमत और ज़िम्मेदारी ज़रूर अ़ता फ़रमाते चाहे वोह छोटी हो या बड़ी।[1]

सूफ़ियाना काविशें

दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त के सिलसिले में सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दो पहलू बड़े नुमायां होते हैं : एक येह कि मुसलमानों को पक्का दीनदार, मुत्तक़ी और परहेज़गार बनाना नीज़ उन की ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह़ करते हुवे उन्हें राहे सुलूक के बुलन्द मरातिब तै करवाना, दूसरा ग़ैर मुस्लिमों को अपने अख़्लाक़ो मह़ब्बत की कशिश से कुफ़्रो शिर्क के गहरे और तारीक ग़ार से निकाल कर इस्लाम की रोशनी में लाना, जिस ज़माने में ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पाक पतन तशरीफ़ लाए तो शहर और मुज़ाफ़ात में ग़ैर मुस्लिम क़ौमें ब कसरत आबाद थीं, येह लोग सख़्त वह़्शी, वहम परस्त, जाहिल और छूत छात के

1 .....ह़ज़रते मख़दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कलयरी, स. 60-66 बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

मरीज़ थे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन को इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत से आगाह किया यहां तक कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते गिरामी के फ़ैज़ से हज़ारों आदमी ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हुवे और सैंकड़ों ने विलायत के मदारिज तै़ किये आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नज़रे फ़ैज़े असर से गुमराह **हादी** और चोर **वली** बन गए।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीनी ख़िदमात

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त के लिये जो कारनामे सर अन्जाम दिये उन में नुमायां कारनामा अ़ब्दुल्लाह मैमून ईरानी के शागिर्द अह़मद क़रामित़ा का रद्दे बलीग़ है जो इस्लामी ममालिक में अपने बात़िल अ़क़ाइद का प्रचार ज़ोर-शोर से कर रहा था कि जो कुछ करना है यहां कर लो जन्नत व दोज़ख़ का कोई वुजूद नहीं, आख़िरत में न तो नेकियों की जज़ा मिलेगी और न बुराइयों की सज़ा होगी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस्लामी मुल्कों का दौरा करते हुवे एक आ़लिमे बा अ़मल और सूफ़िये बा सफ़ा होने की हैसिय्यत से उन गुमराह कुन ख़यालात व अ़क़ाइद की शिद्दत से मुख़ालफ़त की और उस के परख़चे उड़ा कर रख दिये।[2]

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 114 ता 115 मुलख़्ख़सन
2.....अन्वारुल फ़रीद, स. 112 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

सिलसिलए चिश्तिया फ़रीदिया

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़ैज़ान आज भी इसी आन बान से जारी है जिस त़रह़ पहले था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ुलफ़ा दर ख़ुलफ़ा आज भी मस्नदे ख़िलाफ़त पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत व इस्लाह़ में मश्ग़ूल हैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सिलसिलए त़रीक़त को न सिर्फ़ बर्रे सग़ीर पाको हिन्द में अ़ज़ीमुश्शान कामयाबी हुई बल्कि ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, तुर्की, अ़रब, मिस्र और फ़िलिस्त़ीन में भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ुलफ़ा पहुंचे और सिलसिलए आ़लिया चिश्तिया के फ़ैज़ान को आ़म किया। इस अ़ज़ीमुश्शान कामयाबी का सेहरा जिन ख़ुलफ़ा के सर सजता है उन में सुल्त़ानुल मशाइख़, मह़बूबे इलाही ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, मख़्दूमुल मशाइख़ ह़ज़रते ख़्वाजा अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कलयरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, ह़ज़रते शैख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस्मे गिरामी नुमायां हैं।[1]

बाल मुबारक की करामत

मह़बूबे इलाही ह़ज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर था कि इस असना में आप की दाढ़ी मुबारक से एक बाल गिरा, जो मैं ने फ़ौरन उठा

1.....मक़ामे गंजे शकर, स. 183 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

लिया और आप से अ़र्ज़ की, कि अगर इजाज़त मर्हमत फ़रमाएं तो इसे ता'वीज़ बना लूं ? ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इजाज़त अ़ता फ़रमाई। मैं ने उस बाल मुबारक को बा एहतिमाम कपड़े में बांध कर मह़फ़ूज़ कर लिया और देहली में जो कोई भी बीमार मेरे पास आता उसे येह ता'वीज़ इस शर्त़ पर देता कि वोह दुरुस्त होने के बा'द इसे वापस लौटा देगा। मैं ने जिसे भी येह ता'वीज़ दिया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हमेशा सिह़्ह़त याब हुवा। एक मरतबा मेरे अ़ज़ीज़ दोस्त ताजुद्दीन मीनाई का लड़का सख़्त अ़लील हुवा और वोह येह मुबारक ता'वीज़ लेने ह़ाज़िर हुवे लेकिन हुक्मे ख़ुदा से तलाश करने के बा वुजूद येह ता'वीज़ मुझे न मिला और ताजुद्दीन का साह़िबज़ादा इन्तिक़ाल कर गया। कुछ अ़र्से बा'द एक और साह़िब ता'वीज़ के लिये आए तो येह ता'वीज़ वहीं त़ाक़ से फ़ौरन मिल गया जहां मैं पहले तलाश कर चुका था। चूंकि ताजुद्दीन के बेटे की क़िस्मत में शिफ़ा न थी इसी लिये येह मुबारक ता'वीज़ वहां से गुम हो गया और बा'दे अज़ां वहीं से मिल गया।[1]

दरवेश की त़ाक़त

ह़ज़रते मह़बूबे इलाही सय्यिद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में चन्द लोग ह़ाज़िर हुवे और बत़ौरे इम्तिह़ान कुछ सुवालात किये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास उस वक़्त

1.....ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 131 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

लकड़ियों का एक गठ्ठा रखा हुवा था। एक ने सुवाल किया कि दरवेश को किस क़दर रूहानी कुव्वत ह़ासिल होती है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने लकड़ियों के गठ्ठे पर हाथ रख कर फ़रमाया : अगर इस गठ्ठे को कहे तो येह सोने का बन जाए। येह कलिमात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़बान से अभी निकलने न पाए थे कि लकड़ियों का गठ्ठा सोने का बन गया।[1]

ह़ज़रते बाबा फ़रीद के महकते मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सुनह्रे हुरूफ़ से लिखे जाने वाले मुबारक कलिमात आज भी अपनी चमक दमक के ज़रीए आंखों को ख़ीरा कर रहे हैं चन्द एक मुलाह़ज़ा कीजिये और अपनी नूरे बसीरत में इज़ाफ़ा कीजिये।

❀....दुश्मन की दुश्मनी उस से मश्वरा करने से टूट जाती है।

❀....हुनर ह़ासिल करो अगर्चे ज़िल्लत उठानी पड़े।

❀....दो आदमियों का किसी मुआ़मले में मश्वरा करना एक आदमी के दो साल के ग़ौरो फ़िक्र से बेहतर है।

❀....ऐसी चीज़ बेचने की कोशिश मत करो जिसे लोग ख़रीदने की ख़्वाहिश न करें।

❀....मुतकब्बिर आदमी के सब लोग दुश्मन हो जाते हैं।

1.....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 556 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

❁....अपने ऐबों को ढूंडते रहने की आ़दत बनाओ।

❁....हर किसी की रोटी मत खाओ बल्कि हर शख़्स को अपनी रोटी खिलाओ।

❁....घटिया आदमी वोह है जो हर वक़्त खाने और कपड़ों में मश्ग़ूल रहता हो।

❁....नेकी करने के लिये बहाना ढूंडा करो।

❁....इत़मीनाने क़ल्ब चाहते हो तो ह़सद से दूर रहो।[1]

❁....जिस दिल में उ़लमाए किराम और मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की मह़ब्बत हो उन की मह़ब्बत का एक ज़र्रा गुनाहों के ढेर को जला कर ख़त्म कर सकता है।

❁....जो पीर अहले सुन्नत व जमाअ़त के त़रीक़े पर नहीं और उस के अक़्वालो अफ़्आ़ल, ह़रकातो सकनात क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ नहीं वोह इस (पीरी मुरीदी की) राह में डाकू है।[2]

❁....अगर दुन्या को दुश्मन बनाना हो तो तकब्बुर इख़्तियार करो।

❁....आसूदगी दरकार हो तो ह़सद से दूर रहो।

❁....मेहमान के साथ तकल्लुफ़ न बरतो।

❁....इल्म बुज़ुर्गी का बादल है जिस से रह़मत की बारिश बरसती है।

1.....अन्वारुल फ़रीद, स. 430 ता 432 मुल्तक़त़न

2.....फ़ैज़ानुल फ़रीद, स. 38 ता 39 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

❀....जो दरवेश बादशाहों या अमीरों के दरवाज़े पर जाता है समझ लो कि ने'मत से महरूम है क्यूंकि वोह साहिबे ने'मत होता तो कभी मख़्लूक़ के दरवाज़े पर न जाता।[1]

ज़मीन ने गवाही दी

एक शख़्स ने हाकिमे शहर की अदालत में हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़मीन पर मिल्किय्यत का नाजाइज़ दा'वा कर दिया, चुनान्चे, हाकिम ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पैग़ाम भेजा कि ज़मीन की मिल्किय्यत का सुबूत पेश करें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : लोगों से पूछ लो कि येह ज़मीन किस की है ? हाकिम जवाब से मुतमइन न हुवा और सुबूत पेश करने का तक़ाज़ा किया। हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : मेरे पास न तहरीरी सुबूत है न कोई गवाह, अगर तहक़ीक़ दरकार है तो ज़मीन के उसी ख़ित्ते से पूछ लो। हाकिम येह जवाब सुन कर सख़्त हैरान हुवा, लिहाज़ा ख़ुद उसी क़ित्आ अराज़ी पर गया यहां तक कि लोगों का जम्मे ग़फ़ीर हो गया। हाकिम ने ज़मीन से दरयाफ़्त किया : ऐ ज़मीन ! बता तेरा मालिक कौन है ? ज़मीन ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : मैं अर्सए दराज़ से हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) की मिल्किय्यत में हूं। येह सुनते ही हाकिम और तमाम हाज़िरीन दम ब ख़ुद रह गए !!![2]

1.....सवानेहे बाबा फ़रीद गंजे शकर, स. 57-58 मुलख़्ख़सन

2.....सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 194

www.dawateislami.net

मिट्टी सोना बन गई !

हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दर से कोई साइल ख़ाली हाथ वापस न जाता। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हर एक की हाजत पूरी फ़रमाते और हुस्ने सुलूक से पेश आते। एक मरतबा एक ख़ातून हाज़िर हुई कि या हज़रत ! मेरी तीन जवान बेटियां हैं, जिन की शादी करनी है, आप मदद फ़रमाइये। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ुद्दाम से फ़रमाया : जो कुछ भी दरगाह पर मौजूद है वोह ख़ातून को दे दो। ख़ुद्दाम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आज कुछ भी बाक़ी नहीं बचा। येह सुन कर ख़ातून रोने लगी कि मैं बहुत मजबूर हूं और आस ले कर आई हूं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : कि जाओ बाहर से एक मिट्टी का ढेला उठा लाओ, वोह मिट्टी का ढेला उठा लाई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बुलन्द आवाज़ से सूरए इख़्लास पढ़ कर दम किया तो वोह मिट्टी का ढेला सोना बन गया, येह देख कर सब बहुत हैरान हुवे, ख़ातून सोना घर ले गई और घर जा कर उस ने भी पाक साफ़ हो कर सूरए इख़्लास पढ़ कर मिट्टी के ढेले पर दम किया मगर वोह सोना न बन सका, आख़िरे कार तीन दिन तक येही अ़मल करती रही मगर बे सूद। नाचार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में हाज़िर हुई और कहने लगी : हुज़ूर ! मैं ने भी सूरए इख़्लास पढ़ी लेकिन मिट्टी सोना नहीं बनी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि : तू ने अ़मल तो वोही कुछ किया मगर तेरे मुंह में फ़रीद की ज़बान न थी।[1]

---

1 .....अल्लाह के सफ़ीर, स. 298 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "कारतूस" शेर को भी मार सकता है जब कि बेहतरीन बन्दूक़ से अच्छी त़रह़ फ़ेर (Fire) किया जाए। इसी त़रह़ यूं समझें कि औरादो वज़ाइफ़ और दुआ़एं "कारतूस" की त़रह़ हैं और पढ़ने वाले की ज़बान मिस्ले बन्दूक़। तो दुआ़एं वोही हैं मगर हमारी ज़बानें सह़ाबा व औलिया عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सी नहीं। जिस ज़बान से रोज़ाना झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, दिल आज़ारी व बद अख़्लाक़ी का सुदूर जारी रहे उस में तासीर कहां से आए ? हम दुआ़ तो मांगते ही हैं मगर जब मुश्किल आती है तो बुज़ुर्गों के पास ह़ाज़िर हो कर भी दुआ़ की दरख़्वास्त करते हैं, क्यूं ? इस लिये कि हर एक का ज़ेह्न येही बना हुवा है कि पाक ज़बान से निकली हुई दुआ़ ज़ियादा कारगर होती है।[1] इस लिये हमें चाहिये ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाएं और अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल बात चीत और बेहूदा गुफ़्तगू से मह़फ़ूज़ रखें। इस की आ़दत बनाने और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये और मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की भलाइयां हाथ आएंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 161

www.dawateislami.net

विसाले बा कमाल

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 663 हिजरी मुत़ाबिक़ मई सिने 1265 ईसवी में ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार की। शदीद तक्लीफ़ में भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़े बा जमाअ़त ही अदा करते रहे नीज़ औरादो वज़ाइफ़ और नवाफ़िल में कमी न आने दी यहां तक कि मुह़र्रमुल ह़राम 664 हिजरी का चांद नज़र आ गया मुरीद ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो उन्हें दुआओं से नवाज़ा, 4 मुह़र्रमुल ह़राम को सुब्ह़ से ही क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ फ़रमा दी यहां तक कि पांच मरतबा ख़त्मे क़ुरआन फ़रमाया, 5 मुह़र्रमुल ह़राम सिने 664 हिजरी मुत़ाबिक़ 17 अकतूबर सिने 1265 ईसवी को सुब्ह़ से दस बजे तक पांच मरतबा क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाई इस के बा'द ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल हो गए। जब ज़िक्र से फ़ारिग़ हुवे तो मुरीदीन क़रीब आ कर बैठ गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : बाहर जा कर बैठ जाओ, जब मैं बुलाऊं तो अन्दर आ जाना। देर बा'द आवाज़ आई कि अब दोस्त का दोस्त से मिलने का वक़्त क़रीब आ गया है, सब लोग अन्दर आ गए। इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ग़शी त़ारी हो गई, होश आया तो पूछा : क्या इशा की नमाज़ पढ़ चुका हूं, अ़र्ज़ की गई : जी हां, फ़रमाया : दोबारा पढ़ना चाहता हूं, येह कह कर वुज़ू किया और नमाज़ अदा की फिर दोबारा बेहोशी त़ारी हो गई, होश आया तो तीसरी मरतबा नमाज़ पढ़ने की ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया और वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी फिर दो नफ़्ल की निय्यत

www.dawateislami.net

बांध ली, जब पहली रक्अ़त के सजदे में पहुंचे तो बुलन्द आवाज़ से يَاحَيُّ يَاقَيُّوْم कहा और अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी। फिर येह आवाज़ आई जिसे सब लोगों ने सुना कि रूए ज़मीन पर अमानत थी सो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द हुई। इन्तिक़ाल की ख़बर जंगल की आग की त़रफ़ फैल गई, एक कोहराम मच गया, इतने लोग जम्अ़ हुवे कि नमाज़े जनाज़ा का इन्तिज़ाम शहर से बाहर करना पड़ा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर जसदे अक़्दस को शहर में लाया गया, लह़्द के लिये कच्ची ईंटों की ज़रूरत पड़ी तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर का दरवाज़ा तोड़ कर ईंटें निकाली गईं।[1]

फ़रीदुल ह़क़, ह़क़ से जा मिले

ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस रात ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल हुवा, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में देखा कि आस्मान के दरवाज़े खुले हैं और येह निदा आ रही है कि ख़्वाजा फ़रीदुल ह़क़, **ह़क़** से जा मिले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप से ख़ुश है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रौज़ए अन्वर की ता'मीर

ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे पुर अन्वार पंजाब के शहर पाक पतन शरीफ़ में वाक़ेअ़ है,

1.....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 553 मुलख़्ख़सन
2.....हश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 553 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मज़ारे मुबारक की ता'मीर का सिलसिला शुरूअ़ हुवा तो ह़ज़रते मह़बूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देहली से सेंकड़ों हुफ़्फ़ाज़े किराम बुलवाए, हर ईंट पर ग्यारह ग्यारह मरतबा कुरआने मजीद का ख़त्म हुवा।[1]

आप की औलाद

ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चार शादियां फ़रमाई थीं।[2] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पांच बेटे और तीन बेटियां अ़त़ा फ़रमाईं थीं। बेटों के नाम येह थे : (1) शैख़ नसीरुद्दीन नसरुल्लाह (2) शैख़ शहाबुद्दीन (3) शैख़ बदरुद्दीन सुलैमान (4) ख़्वाजा निज़ामुद्दीन (5) शैख़ या'क़ूब। जब कि बेटियों के नाम येह थे : (1) बीबी मस्तूरा (2) बीबी शरीफ़ा (3) बीबी फ़ात़िमा।

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दूसरी बेटी ह़ज़रते बीबी शरीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ज़ोह्दो इ़बादत में अपने ज़माने की ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا थीं और ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप के बारे में अक्सर फ़रमाया करते थे कि अगर औ़रतों को ख़लीफ़ा करना जाइज़ होता तो मैं शरीफ़ा को अपना ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन कर देता।[3]

1.....चिश्ती ख़ानक़ाहें और सरबराहाने बर्रे सग़ीर, स. 54 मुलख़्ख़सन
2.....चिश्ती ख़ानक़ाहें और सरबराहाने बर्रे सग़ीर, स. 50
3.....गुलज़ारे अबरार मुतर्जम, 49 ता 52 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मल्फ़ूज़ात

❀.....हर शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही देता है और जब वोह अ़ता फ़रमाता है तो कोई छीन नहीं सकता।

❀.....अपने आप से भागना गोया ख़ुदा तआ़ला तक पहुंचना है।

❀.....जाहिल व नादान को ज़िन्दा ख़याल न करो।

❀.....जो शख़्स नादान हो कर अपने आप को दाना ज़ाहिर करे उस से हमेशा बच कर रहो।

❀.....जो सच झूट के मुशाबेह हो उसे ज़बान से न निकाल।

❀.....हर शख़्स की रोटी न खाओ, हां आ़लिम लोगों को बिग़ैर किसी तख़्सीस के खाना दो।

❀.....(जिस बात का यक़ीन न हो उसे अपने) अटकल पच्चू से न कहो।

❀.....दुश्मन की कड़वी कसीली बात से मुतग़य्यर न होना चाहिये।

❀.....दुश्मन से मह़फ़ूज़ रहने की हमेशा कोशिश करो।

❀.....गुनाह कर के शैख़ी बघारना सख़्त मा'यूब है।

❀.....बात़िन ज़ाहिर से उ़म्दा और बेहतर रखो।

❀.....आराइश व नुमाइश में कोशिश न करो।

❀.....नफ़्स को जाहो दौलत के लिये ज़लील व बे क़द्र न करो।

❀.....क़दीम ख़ानदान की हुरमत व इ़ज़्ज़त मह़फ़ूज़ रखो।

❀.....औ़रतों में गालियां देने की आ़दत पैदा न करो।

❀.....ने'मत की शुक्र गुज़ारी करो।

www.dawateislami.net

❀.....किसी पर एह़सान न जताओ।

❀.....मिज़ाज की सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत को बड़ी ने'मत समझो।

❀.....अगर तुम्हें आसूदगी व आसाइश पेशे नज़र है तो ह़सद न करो।

❀.....जिस चीज़ की बुराई पर दिल गवाही दे उस का ख़याल जल्द छोड़ दो।

❀.....किसी दुश्मन से बे ख़ौफ़ न रहो, गो वोह तुम से ख़ुश ही क्यूं न हो ?

❀.....जो तुम से डरता हो तुम उस से डरो।

❀.....अगर तुम ज़लीलो रुस्वा होना नहीं चाहते तो कभी किसी से लड़ाई न करो।

❀.....शहवत के वक़्त ख़ुद्दारी तमाम वक़्तों से ज़ियादा करना चाहिये।

❀.....जब अहले दौलत के साथ बैठो तो दीन को फ़रामोश न करो।

❀.....इ़ज़्ज़तो ह़श्मत इन्साफ़ व अ़द्ल में जानो।

❀.....तवंगरी और दौलत मन्दी के वक़्त आ़ली हिम्मत रहो।

❀.....''दीन'' का कोई मुआ़वज़ा नहीं हो सकता।

❀.....''वक़्त'' का कोई बदल नहीं मिल सकता।

❀.....दुश्मन से मश्वरा मत लो।

❀.....दोस्त को, मुतवाज़ेआ़ना अख़्लाक़ से अपना गिरवीदा बना लो।

❀.....दीन की इ़ल्म से निगहदाश्त (रखवाली) करो, अगर इ़ज़्ज़त व बुलन्दी के त़ालिब हो तो मुफ़्लिसों और शिकस्ता दिलों के पास बैठो।

❀.....अपने ऐ़ब को हमेशा ज़ेरे नज़र रखो।[1]

1.....सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 141 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बिहिश्ती दरवाज़ा

हज़रते पीर सय्यिद गुलाम हैदर अ़ली शाह जलालपुरी चिश्ती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़बीअ़त नासाज़ थी । हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को हुक्म हुवा कि अ़त्तार की दुकान से जा कर नुस्ख़ा बंधवा लाएं । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बैठे दुकान में नुस्ख़ा बंधवा रहे थे कि शोर हुवा, एक बुज़ुर्ग पालकी में सुवार हो कर आ रहे हैं । और मुनादी (निदा करने वाला) उन के आगे आगे निदा कर रहा है जो इन की ज़ियारत करेगा (اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ) वोह जन्नती होगा । लोग जूक़ दर जूक़ ज़ियारत को जा रहे थे । लेकिन हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) ही न की । बल्कि जब पालकी नज़्दीक आई तो दुकान के अन्दर के हिस्से में तशरीफ़ ले गए । हर चन्द लोगों ने इसरार किया मगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तवज्जोह न फ़रमाई । जब पालकी गुज़र गई तो आप नुस्ख़ा लिये मुर्शिदे कामिल की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर होने के लिये रवाना हुवे । हज़रते ख़्वाजा बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देर से आने की वज्ह दरयाफ़्त की तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब में तमाम वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया ।

हज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बा अदब मुरीद की येह बात सुन कर बहुत ख़ुश हुवे और

www.dawateislami.net

जोश में आ कर फ़रमाया : ऐ फ़रीद ! उस की ज़ियारत करने से लोग आज के दिन जन्नती होते हैं तो तुम्हारे दरवाज़े से क़ियामत तक जो भी गुज़रेगा (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) वोह जन्नती होगा।[1]

हज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सालाना उ़र्स के मौक़अ़ पर लाखों अ़क़ीदत मन्द दूर दराज़ मक़ामात से सफ़र कर के मज़ारे मुबारक की ज़ियारत करते हैं और "बिहिश्ती दरवाज़े" से गुज़रते हैं। येह दरवाज़ा पांच से दस मुह़र्रमुल ह़राम तक हर रात खोला जाता है। इसे **"बिहिश्ती दरवाज़ा"** कहने की एक वज्ह येह भी है कि एक मरतबा सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवे तो ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस दरवाज़े पर जल्वा फ़रमा हैं और फ़रमा रहे हैं कि निज़ामुद्दीन ! जो शख़्स उस दरवाज़े में दाख़िल होगा उसे अमान मिलेगी, उस दिन से उस दरवाज़े का नाम **"बिहिश्ती दरवाज़ा"** पड़ गया।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिहिश्ती दरवाज़े से गुज़रने वालों को जन्नती होने की बिशारत अ़त़ा हुई इस सिलसिले में येह बात याद रखिये कि कोई शख़्स अपने आ'माल की वज्ह से बिहिश्त में नहीं जाएगा बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और

1.....ज़िक्रे ह़बीब, स. 421 मुलख़्ख़सन
2.....ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, 2 / 136 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

फ़ज़्लो करम से दाख़िल होगा चुनान्चे, हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : किसी को उस का अ़मल नजात नहीं दे सकेगा । लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप को भी नहीं ? फ़रमाया : न मुझे मगर येह कि **अल्लाह** मुझे मेहरबानी से अपनी रह़मत में छुपा ले ।[1]

जब सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि जिन की ख़ातिर सारी काएनात बनाई गई का येह मुआ़मला है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के बिग़ैर दाख़िले बिहिश्त न होंगे तो हमारे आ'माल की क्या ह़ैसिय्यत है कि हम उन पर फूलें और उन की बदौलत बिहिश्त में दाख़िल होने का सोचें ![2]

फिर येह कि जन्नती होने की बिशारत इसी त़रह़ है जैसे बा'ज़ आ'माल की अदाएगी पर जन्नती होने की नवीद (ख़ुश ख़बरी) अ़त़ा फ़रमाई है चुनान्चे, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिरो बात़िन के साथ मुतवज्जेह हो कर दो रक्अ़त पढ़े, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है ।[3]

एक और मक़ाम पर जन्नत की बिशारत यूं अ़त़ा फ़रमाई है कि जो अपने भाई के किसी ऐ़ब को देख ले और उस की

1 ... بخاری، کتاب الرقاق، باب القصد والمداومة علی العمل، ۴/۲۳۷، حدیث: ۶۴۶۳

2 .....बिहिश्ती दरवाज़ा, स. 11 बि तग़य्युरिन

3 مسلم، کتاب الطهارة، باب الذکر المستحب عقب الوضوء، ص ۱۴۴، حدیث: ۲۳۴

www.dawateislami.net

पर्दापोशी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस पर्दापोशी की वज्ह से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ऐसी तमाम रिवायतों के मुतअ़ल्लिक़ उसूल बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला उन्हें नेक आ'माल करने, बुरे आ'माल से बचने या उन से तौबा करने की तौफ़ीक़ देगा जिस से वोह दोज़ख़ से बच जाएंगे। अ़वाम में मश्हूर है कि जो पाक पतन शरीफ़ में ह़ज़रते बाबा गंजे शकर फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मक़बरे के बिहिश्ती दरवाज़े में दाख़िल हो जाए वोह जन्नती है वहां भी मत़लब येह है कि ख़ुदा तआ़ला उसे जन्नती आ'माल की तौफ़ीक़ देगा और उस दरवाज़े में दाख़िले की बरकत से गुज़श्ता गुनाहे सग़ीरा मुआ़फ़ फ़रमा देगा, गुनाहे कबीरा से बचने की तौफ़ीक़ देगा, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ (پ۱، البقرة:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दरवाज़े में सजदा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआ़फ़ हों, हम तुम्हारी ख़त़ाएं बख़्श देंगे।*

येह मत़लब नहीं कि उन लोगों के लिये गुनाह ह़लाल हो गए।[2]

---

1 ... المعجم الکبیر، مسند عُقْبَة بن عامر، ۱۷/۲۸۸، حدیث: ۷۹۵

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 8 / 257 बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

दहाड़ें मार मार कर रोने लगे

मुहर्रमुल ह़राम सिने 1427 हिजरी मुत़ाबिक़ फ़रवरी सिने 2006 ईसवी में होने वाले ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के उ़र्से मुबारक में मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई (दा'वते इस्लामी) के ज़िम्मेदारान पहली मरतबा गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों में मदनी काम करने की निय्यत से पहुंचे तो पता चला कि ख़ुसूसी इस्लामी भाई 3 और 4 तारीख़ से आना शुरूअ़ हो जाते हैं और 5,6,7 मुहर्रमुल ह़राम को इन की ता'दाद कसीर हो जाती है। उ़र्स के मौक़अ़ पर सिटी गवर्नमेन्ट एम सी एलीमेन्टरी स्कूल में उन के क़ियाम की तरकीब होती है। उ़र्स के मौक़अ़ पर सिटी गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से 10 दिन स्कूल बन्द रहते हैं। मजलिस के अराकीन की इनफ़िरादी कोशिश की बरकतों से गूंगे बहरों में ख़ैरख़्वाही की तरकीब बनाने के साथ साथ इशारों की ज़बान में नेकी की दा'वत का सिलसिला भी शुरूअ़ किया गया तो अन्दाज़ा हुवा यहां आने वाले गूंगे बहरों की ह़ालत इन्तिहाई नागुफ़्ता बेह है। बा'ज़ गूंगे चरस और भंग जैसे नशे के आ़दी थे। शुरूअ़ शुरूअ़ में येह गूंगे बहरे, **मुबल्लिग़ीन** इस्लामी भाइयों से कतराते रहे। फिर इन की ख़ैरख़्वाही का एहतिमाम मजलिस की त़रफ़ से किया गया और जब येह खाने पर जम्अ़ हुवे तो इन पर इशारों में इनफ़िरादी कोशिश शुरूअ़ की गई, जिस से येह क़रीब आए। दूसरे दिन इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त की तरकीब रखी गई। जिस में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने इशारों में ह़म्दो ना'त के बा'द सुन्नतों भरा बयान

www.dawateislami.net

फ़रमाया। जिस से गूंगे बहरे इस्लामी भाई इन्तिहाई मुतअस्सिर हुवे फिर जब दुआ़ से पहले मुबल्लिग़ ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के पुर असर मुनाजात के अश्आ़र "कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ" पढ़ी और इशारों की ज़बान के तरबियत याफ़्ता एक इस्लामी भाई ने इशारों में जब मुनाजात के अश्आ़र पेश किये तो गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों की अ़जीब कैफ़िय्यत हो गई। वोह ख़ौफ़े ख़ुदा और गुनाहों की नदामत के बाइ़स दहाड़ें मार मार कर रोने लगे। कई तो अपने आप पर क़ाबू न रख सके और ज़मीन पर लोटने लगे। वहां मौजूद उ़मूमी इस्लामी भाई येह मन्ज़र देख कर बहुत हैरान हुवे और जज़्बाते तअस्सुर से उन की आंखें भी भीग गईं। स्कूल के तमाम असातिज़ा और हेड मास्टर का कहना था कि हम ने आज तक इन गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों को उ़मूमन ताश खेलते और नशा करते देखा है। आज हम इन का येह अन्दाज़ देख कर हैरान हैं हम आप सब को दा'वत देते हैं कि आप हर बार आएं, हमारी ख़िदमात आप के साथ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ुसूसी फ़ैज़ान से गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों ने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की और आयिन्दा पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने का अ़ज़्म किया, इस के इ़लावा हर माह 3 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रमज़ानुल मुबारक में ए'तिकाफ़ में बैठने की निय्यत भी की। आख़िर में मजाज़े **अ़त्तार** के ज़रीए़ मुरीद हो कर "**अ़त्तारी**" भी बन गए।[1]

---

1 .....गूंगा मुबल्लिग़, स. 33

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा के लिये इन पाकीज़ा नुफ़ूस की मह़ब्बत दिल में बसाते हुवे इन के नक़्शे क़दम पर चल कर ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मज़ाराते औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में औलियाउल्लाह की मह़ब्बत व अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (ता दमे तह़रीर) दुन्या के कमो बेश 200 ममालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 104 से ज़ियादा मजालिस क़ाइम हैं, इन्ही में से एक "मजलिसे मज़ाराते औलिया" भी है जो दीगर मदनी कामों के साथ साथ दर्जे ज़ैल ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

1. येह मजलिस औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के रास्ते पर चलते हुवे मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर होने वाले इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां है।

2. येह मजलिस ह़त्तल मक़्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करती है।

3. मज़ारात से मुल्ह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू,

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और इस का दुरुस्त त़रीक़ा नीज़ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं।

4. आ़शिक़ाने रसूल को ह़स्बे मौक़अ़ अच्छी अच्छी निय्यतों मसलन बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने, साह़िबे मज़ार के ईसाले सवाब के लिये हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहने की तरग़ीब दी जाती है।

5. "मजलिसे मज़ाराते औलिया" अय्यामे उ़र्स में साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब का तोह़्फ़ा भी पेश करती है और साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साह़िबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के इन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी काम वग़ैरा से आगाह रखती है।

6. मज़ारात पर ह़ाज़िरी देने वाले इस्लामी भाइयों को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़त़ाकर्दा नेकी की दा'वत भी पेश की जाती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ता ह़यात औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का अदब करते हुवे इन के दर से फ़ैज़ पाने की

www.dawateislami.net

तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इन मुबारक हस्तियों के सदक़े दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ाराते औलिया पर लगाए जाने वाले तरबियती हल्क़ों के मौज़ूआत

हल्क़ा नम्बर 1 : मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी का त़रीक़ा

हल्क़ा नम्बर 2 : वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम का त़रीक़ा

हल्क़ा नम्बर 3 : नमाज़ का सबक़

हल्क़ा नम्बर 4 : नमाज़ का अ़मली त़रीक़ा

हल्क़ा नम्बर 5 : राहे ख़ुदा में सफ़र की अहम्मिय्यत (मदनी क़ाफ़िलों की तय्यारी)

हल्क़ा नम्बर 6 : दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ने का त़रीक़ा

हल्क़ा नम्बर 7 : नेक बनने और बनाने का त़रीक़ा (मदनी इन्आ़मात)

हिदायात : मदनी हल्क़ा मज़ार के इह़ाते के क़रीब हो जिस में दो ख़ैरख़्वाह मुक़र्रर किये जाएं जो दा'वत दे कर ज़ाइरीन को हल्क़े में शिर्कत करवाएं। हर हल्क़े के इख़्तिताम पर इनफ़िरादी कोशिश की जाए और अच्छी अच्छी निय्यतें करवाई जाएं और नाम व नम्बर्ज़ मदनी पेड पर तह़रीर किये जाएं।

मज़ाराते औलिया पर मदनी हल्क़ों में दी जाने वाली नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर

www.dawateislami.net

ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों का सिलसिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अह़कामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और **अल्लाह** के नेक बन्दों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी ह़ल्क़ों में शामिल हो जाइये। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से माला माल फ़रमाए।[1]

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهٗ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَدْخُلُهَا

या'नी "जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।"

(حلیة الاولیاء، ج۷، ص۲۹۹، حدیث ۱۰۵۹۰)

1 .....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात, स. 32

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	ترجمہ قرآن کنزالایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	صحیح البخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
3	صحیح مسلم	دارالمغنی عرب شریف، ۱۴۱۹ھ
4	سنن ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۱ھ
5	سنن الترمذی	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
6	سنن ابن ماجۃ	دارالمعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
7	مسند احمد	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
8	مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت، ۱۴۲۰ھ
9	کنزالعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
10	المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۲ھ
11	المعجم الاوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۲ھ
12	شعب الایمان	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
13	مشکاۃ المصابیح	دارالفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ
14	تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۷ھ
15	کتاب الزھد للبیھقی	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ، بیروت، ۱۴۱۷ھ
16	سیر اعلام النبلاء	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۷ھ
17	احیاء العلوم	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ء
18	الترغیب والترہیب	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۸ھ
19	اخبار الاخیار	فاروق اکیڈمی، خیرپور پاکستان
20	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ، بیروت، ۱۴۲۲ھ
21	التعریفات	دارالمنار للطباعۃ والنشر
22	مرأۃ المناجیح	ضیاء القرآن، مرکز الاولیاء لاہور
23	سیر الاولیاء مترجم	مشتاق بک کارنر، مرکز الاولیاء لاہور
24	حیات گنج شکر	اکبر بک سیلرز، مرکز الاولیاء لاہور 2012ء
25	سیر الاقطاب مترجم	نفیس اکیڈمی، باب المدینہ کراچی 1987ء

www.dawateislami.net

26	اقتباس الانوار	الفیصل ناشران، مرکز الاولیاء لاہور
27	انوار الفرید	زاویہ پبلشرز، مرکز الاولیاء لاہور 2006ء
28	فوائد الفواد مترجم	مدینہ پبلشنگ کمپنی، باب المدینہ کراچی 1978ء
29	محبوب الٰہی	فرید بک اسٹال، مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۳ھ
30	ہشت بہشت	شبیر برادرز، اردو بازار لاہور 2000ء
31	تذکرہ اولیائے پاکستان	شبیر برادرز، مرکز الاولیاء لاہور
32	جواہر فریدی مترجم	مکتبہ بابا فرید، پاک پتن شریف
33	اللہ کے سفیر	القریش پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور 2013ء
34	چشتی خانقاہیں اور سربراہانِ برصغیر	مکتبہ نبویہ، مرکز الاولیاء لاہور
35	خزینۃ الاصفیاء	مکتبہ نبویہ، مرکز الاولیاء لاہور 2010ء
36	اردو دائرۂ معارفِ اسلامیہ	دانش گاہ پنجاب، مرکز الاولیاء لاہور، ۱۴۰۰ھ
37	معیار سالکان طریقت	سندھی ادبی بورڈ جامشورو
38	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
39	گلزارِ ابرار مترجم	مکتبہ سلطان عالمگیر، مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۷ھ
40	جنتی محل کا سودا	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
41	مَعْدَنِ اَخلاق حصہ اوّل	شرکت قادریہ، سنجھورو سندھ 1980ء
42	شانِ اولیا المعروف ہفتادِ اولیاء	مشتاق بک کارنر، مرکز الاولیاء لاہور
43	رسائل امام غزالی	دار الفکر، بیروت
44	فیضانِ سنّت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
45	انفرادی کوشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
46	حضرت مخدوم علاؤالدین علی احمد صابر کلیری	رضا پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور 2003ء
47	سوانح بابا فرید گنج شکر	خزینہ علم وادب، مرکز الاولیاء لاہور
48	فیضان الفرید	مشتاق بک کارنر، مرکز الاولیاء لاہور
49	ذکرِ حبیب	ادارہ حزب اللہ، جلال پور شریف جہلم ۱۴۲۷ھ
50	تعارف امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
51	فیضانِ بسم اللہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
52	گونگا مبلغ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
53	مزاراتِ اولیاء کی حکایات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	गंजे शकर कहने की वज्ह	22
विलादते बा सआ़दत	2	आदाबे मुरीदी	23
नामो नसब	2	हांसी में क़ियाम	25
ख़ानदानी पस मन्ज़र	3	शोहरत और नामो नुमूद से नफ़रत	26
वालिदैने माजिदैन	4	पाक पतन में जल्वा गरी	28
ग़ैर मुस्लिम चोर को ईमान नसीब हो गया	5	जोगी की क़बीह़ ह़रकतों का ख़ातिमा	29
रमज़ान में दूध न पिया	5	अख़्लाक़ व सिफ़ात	31
तरबियत का एक अन्दाज़	8	तवाज़ोअ़	31
क़सीदा याद करने पर इन्आ़म	9	सादगी	32
ता'लीमो तरबियत	10	अ़फ़्वो दर गुज़र	32
शरफ़े बैअ़त का वाक़िआ़	12	ज़ालिम का अन्जाम	33
बाबा फ़रीद "ह़नफ़ी" हैं	14	हर नेक बन्दे का एह़तिराम कीजिये	34
सैरो सियाह़त	15	गुस्ताख़ का इ़ब्रतनाक अन्जाम	34
तह़सीले इ़ल्म के लिये सफ़र	16	अन्दाज़े तदरीस	36
शैत़ान क़ाबू न पा सकेगा	16	उ़लूमो फ़ुनून के माहिर	37
सय्यिदुना सैफ़ुद्दीन बाख़रज़ी की बिशारत	17	इ़ल्मे शरीअ़त पढ़ने का मक़्सद	38
		तमाम उ़लूम पर उ़बूर	39
हम अ़स्र व हम सफ़र	18	दिलजूई ने दिल जीत लिया	40
मुर्शिद की बारगाह में ह़ाज़िरी	18	अमीरे अहले सुन्नत सीरते गंजे शकर के मज़हर हैं	42
सुल्त़ानुल हिन्द की नज़र का कमाल	19		
सुल्त़ानुल हिन्द का फ़रमान	21	आप जैसा कोई नज़र नहीं आता	43

www.dawateislami.net

सज़ा मुआफ़ कर दी	43	इस्तिक़ामत की दौलत अ़ता फ़रमा दी	69
बाबा फ़रीद गंजे शकर और मुहासबए नफ़्स	46	फ़ौजी अफ़्सर के आंसू	69
सादा और कम खाने की तरबियत	47	तवक्कुल सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात पर	70
नफ़्स की मुख़ालफ़त	48	आ़दाते मुबारका	71
सजदों की कसरत	48	बिला नाग़ा गुस्ल फ़रमाते	73
लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ातिर क़र्ज़ न लें	49	बाबा फ़रीद का लिबास	74
मैं जोड़ने वाला हूं	51	मैं उ़म्दा लिबास पहनने से कतराता हूं	75
कर भला हो भला	52	ह़ज़रते बाबा फ़रीद का बिस्तर	76
सख़ावत व बे नियाज़ी	55	इफ़्तारी का सामान	78
मुरीद हो तो ऐसा !	56	किश्मिश का पानी पीना सुन्नत है	79
नसीब अपना अपना	57	मिल कर खाना खाओ	80
हाथ चूमने की बरकत	60	सेर होने का नुस्ख़ा	80
दर्से बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर	62	मिल कर खाने में मे'दे का इ़लाज	81
अख़्लाक़ी ता'लीम	62	निकाह़ का वाक़िआ़	81
रूह़ानी ता'लीम	62	सब्रो तवक्कुल का घराना	82
तन्ज़ीमी हिदायात	63	इ़बादत व इस्तिग़राक़	84
मुरीद के दरजात की बुलन्दी पर शुक्र	64	रियाज़ात व मुजाहदात	84
इत्तिबाए शरीअ़त की तल्क़ीन	64	बारगाहे फ़रीदी का जलाल	85
मह़रूमी के चार अस्बाब	65	त़रीक़ए बैअ़त	85
दरवेशी की शराइत़	65	मदनी तरबियत गाह	86
सात सो मशाइख़ का फ़ैसला	66	ख़ानक़ाहे फ़रीदी का उसूल	87
क़नाअ़त किसे कहते हैं ?	67	सूफ़ियाना काविशें	87
ज़ाहिरो बात़िन एक था	68	दीनी ख़िदमात	88

www.dawateislami.net

सिलसिलए चिश्तिया फ़रीदिया	89	आप की औलाद	98
बाल मुबारक की करामत	89	मल्फ़ूज़ात	99
दरवेश की ताक़त	90	बिहिश्ती दरवाज़ा	101
हज़रते बाबा फ़रीद के महकते मदनी फूल	91	दहाड़ें मार मार कर रोने लगे	105
ज़मीन ने गवाही दी	93	मजलिसे मज़ाराते औलिया	107
मिट्टी सोना बन गई !	94	तरबियती हल्क़ों के मौज़ूआत	109
विसाले बा कमाल	96	मज़ाराते औलिया पर दी जाने वाली नेकी की दा'वत	109
फ़रीदुल हक़, हक़ से जा मिले	97		
रौज़ए अन्वर की ता'मीर	97	मआख़िज़ो मराजेअ़	111

नेक बन्दे की पहचान क्या है ?

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे हक़ीक़त बुन्याद है, बेशक लोगों में से वोह लोग बुरे हैं जिन से लोग महज़ उन के शर की वज्ह से बचते हों।

(مُوطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۳، حدیث ۱۷۱۹)

मज़ीद सुल्ताने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और **अल्लाह** तआ़ला के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐ़ब तलाश करते हैं।

(مسند امام احمد، ج۶، ص ۲۹۱، حدیث ۱۸۰۲۰)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

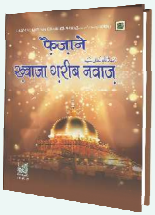

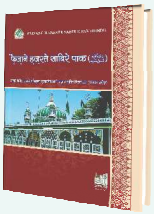

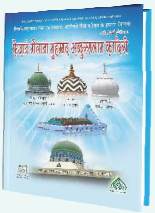

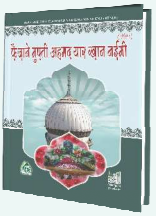

ISBN
0133037

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- ۞ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ۞ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ۞ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ۞ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net